



# ★ आवश्यक विधि ★

प्रकाशक

जोधपुर निवासी भीष्म केशोरमलजी खिरमरा की  
धर्मपत्नी अखंड मौभाग्यवती श्रीमती  
गेंदा कुमारीजी दत्त द्रव्य से

पारम्य इन्द्रचन्द्र जैन

मन्त्री श्रीबिनहरिसागर सूरि जैन ज्ञान भण्डार  
लोहावट जाटावाम ( भारवाड़ )

द्वितीया वृत्ति, ३-००

वि० सं० २००४ ] मूल्य १=) [ वार स २८५५ ]

## ॐ धन्यवाद ॐ



अवश्य करने योग्य—आवश्यक विधि नाम की इस पुस्तिका  
दूर आचार्य दत्त जी श्री १० = श्री मजिन्द्रसिंहसागर श्रीश्वरजी  
राज साहब के शिष्यरत्न श्रीमार् हमेशापरश्री म राज साहब ने  
हीत की । इसकी ३ • प्रतिया धन्यवाते में द्रव्य सहायता से वाञ्छ  
नुसार धन्यवाद के पात्र हैं ।

मुनि प्रेमसागर

अहं नम

॥ श्री सुखसागर भगवज्जिन हरि पूज्य गुरुभ्यो नम ॥

## ॥ आवश्यक विधि ॥

अवश्य करने योग्य—'आवश्यक विधि' नाम की  
पुस्तक भव्यात्माओं के हितार्थ  
प्रस्तुत की जाती है ।



णमो अरिहताण, णमो सिद्धाण, णमो श्रायरियाण,  
णमो उवज्झायाण, णमो लोए मच्चसाहण, एसो पच  
णमुत्तकारो, सच्चपावप्पणासणो, मगलाण च सच्चेसिं,  
पढम हवइ मगल ॥

भाषा—श्री अरिहतदेव, सिद्ध भगवान, आचार्य महा  
राज, उपाध्याय महोदय और ढाई द्वीपमें धतमान सच साधु  
महार्मा इन पाच परमेष्ठियों को मेरा नमस्कार हो । परमे  
ष्ठियों को किया हुआ नमस्कार सच पापों को नाश करता है  
और सच प्रकार के मगलों में प्रधान मगलरूप है । इसलिये  
आत्माओं को विधि पूर्वक नमस्कार मंत्र का पाप हमेशा  
करना चाहिये ।

## ॥ सामायिक लेने की विधि ॥

सामायिक लेने वाले भावक और धार्मिकार्थें शुद्ध वस्त्र पहनकर उपाश्रय में पीपय शाला म, घम शाला म अथवा घरभीषण त और शांत जगह में चौकी या ठषणी की प्रमांर्नना कर उसके श्री स्थापना जी पुस्तक या मयकार वाली रखकर स्थापित करें । "श्री स्थापनाजी की प्रतिष्ठा के निमित्त ३ नवकार गिनें । "श्री स्थापनाजी" की १३ धोल से पहिलेहना करें ।

## ॥ श्री स्थापनाजी के १३ धोल ॥

१-शुद्ध स्वरूप धारू २-ज्ञान ३-दर्शन ४-धारित्र सहित ५-सदहणा शुद्धि ६-प्ररूपणा शुद्धि ७-दर्शन शुद्धि सहित ८-पांच आचार पाहू ९-पलावू १०-अनुमोदू ११-मनोगुप्ति १२-बचनगुप्ति १३-काय गुप्ति आदरू ।

पहू वू श्री गुरु महाराज को या गुरु स्थातीय श्री को यदत करने क लिए तान "प्रमासमण" दें ।

## ॥ स्वमासमण ( गुरुवन्दन ) ॥

इच्छामि स्वमासमणो । घटिञ्ज ज्ञावणिज्जाए निसीहि  
आए मत्थएण वदामि ।

भाषार्थः—हे क्षमाशील गुरु ? मैं सब पापों का निवेद्य  
हरके शक्ति के अनुसार आपको घन्दन करना चाहता हू ।  
उसी शुभ भावना से प्रेरित हो सिर झुकाकर घन्दन करता हू ।

यदि मैं भी गुरु महाराज को इस प्रकार सुख साना  
पूछनी चाहिये ।

## ॥ सुप्त पृच्छा पाठ ॥

इच्छामि भगवन् ! सुहगाई सुहदेवमि सुख तप शरीर  
निराबाध सुख समय यात्रा निर्गहते होजी स्वामिन् माता हे ?  
आहार पानी का लाम दीजियेगा ।

भाषार्थ —हे भगवन् ! मैं मानता हू आपकी रात्रि  
सुख पूर्वक बीती होगी दिन सुख पूर्वक बीता होगा, तप  
सुख पूर्वक पूर्ण हुआ होगा, शरीर पीडा रहित होगा ।  
संयम याथा का निर्वाह आप सुप्त पूर्वक करते होंगे । हे

गुरो ! आपको कुशल है ? (सामायिक विना की अवस्था में) मैं प्रार्थना करता हूँ कि निर्दोष आहार पानी को लेकर मुझे "धर्म लाभ" दें ।

कुशल प्रश्न के बाद दोनों घुटनों को जमीन पर टेक कर सिर झुकाकर दाहिना हाथ जमीन पर या खरबले पर रखकर बाँये हाथ में मुख के आगे "मुँहपत्ति" लेकर 'अव्भुष्टियोपाठ' बोले ।

॥ अव्भुष्टियो ( गुरुक्षामणा ) ॥

इच्छाकारण सदिसह भगवन ! अव्भुष्टियोमि अर्द्धिभतर देवसिय ( राइय ) खामेठ । इच्छ, खामेमि देवसिय ( राइय ) । जर्किचि अपत्तिअ पर पत्तिअ भत्ते, पाणे, विणए, वेआवत्ते, आलावे, सलावे, उच्चासणे, समासणे, अतरमासाए, उवरि मासाए जर्किचि मज्झ विणय-परि हीण सुहुम वा पायर वा तुम्मे जाणह अह न जाणामि तस्म मिच्छामि दुक्कड ।

भाषा — हे गुरो ! मुझसे जो कुछ सामाय या विशेष रूप से मंगीति हुई हो, इसी तरह आवदे आहार

पानी के विषय में विनय-वेयावश के विषय में, आपके साथ एक बार बातचीत में, बार बार बातचीत में, आपसे उचे आसन पर बैठने में, परापर के आसन पर बैठने में, आपके संभाषण के बीच या बाद में बोलने में मुझसे थोड़ा बहुत जो कोई अविनय हुआ हो उसकी मैं माफी चाहता हूँ ॥

इस प्रकार गुप्त ध्यान करके एक स्वमासमण देवे और "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । सामायिक लेवा मुह पत्ति पडिलेह ? इच्छ कहकर उक्तु बैठकर मुहपत्ति की पडिलेहना' करे । मुहपत्ति पडिलेहन करके स्वमासमण देकर कहे "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक संदिसाहूँ" इच्छ, दूसरी बार स्वमासमण देकर 'इच्छा कारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउ" । इच्छ । बादमें खड़ा होकर आधा अंग नमाकर तीन नयकार गिने । बाद में "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पसायकरी सामायिक वण्डक उधरावोर्जी" । ( ऐसा कहे बाद गुरु महाराज हों तो उनसे या अपने से बड़े सामायिक घागी से अथवा अपने आप तीनवार ) "करेमिभते" का उच्चारण करे ।

॥ करेमिभते सामायिक सूत्र ॥



वाचनियम पञ्जुवामामि । दुविह तिविहेण मणेण वायाए  
 काणण न करेमि न कारवेमि । तस्म मते पडिक्कपामि  
 निंदामि गरिहामि अप्पाण वोमिरामि ॥

भाषा—हे भगवन् ! मैं सामायिक राग-द्वेष का  
 ममाथ और ज्ञान दर्शन-चारित्र का लाभ स्वीकारता हूँ ।  
 इसलिये पाप वाले व्यापार को मैं त्यागता हूँ । जब तक मैं  
 इस नियम का पालन करता हूँ तब तक मन वचन और  
 शरीर इन तीन माधनों से पाप व्यापारों को न स्पर्श करूँगा  
 और न दूसरों से कराऊँगा । हे गुरु ! इन प्रतिज्ञा के साथ  
 मैं मानसिक कायिक और वाचिक पाप व्यापारों से पीछे  
 हटता हूँ । हृदय से उनको धुरा समझता हूँ । आपके सामने  
 उनकी निन्दा करता हूँ और इस प्रकार मैं अपनी आत्मा  
 को पापों से छुड़ाता हूँ ।

इस प्रकार तीनधार " करेमिमते " उच्चारण के बाद  
 एक क्षमासमय देये और गमना गमन में होने वाली जीव  
 हिंसा के पाप से छूटने को ' इरिया वहिया " करे ।

॥ इरियावहिया सूत्र ॥

इच्छा कारेण सदिसह भगवन् ! इरियावहिय पडि-

करुणामि । इच्छ, इच्छामि पठिष्कमिउ । इरियावहियाए  
 विराहणाए, गमणा गमणे, पाणकरुमणे वीयकरुमणे  
 हरियक्कमणे ओमा-उत्तिग-गणग दम मड्डी मक्कडा सताणा,  
 सकमणे, जे मे जीवा विराहिया, ण्णिदिया, वेइदिया,  
 तेइदिया, चउरिंदिया पच्चिदिया अमिहया, उत्तिया, लेमिया,  
 सघाइया, सघट्टिया, परियाचिया, किआमिया, उइविया,  
 ठाणा ओ ठाण सकामिया जीवियाओ बवरोविया तस्स  
 मिच्छामि दुक्कड ।

भामर्ध — हे भगवन् ! इच्छा पूरक आशा दीजिये,  
 ताकि मार्ग में चलने फिरने आदि से जो जीव विराघना  
 होती है । उससे तज्ज य अतिचारों से मैं निवृत्त होऊ ।  
 भूत काल में गमना गमन करते हुए मैंने किसी प्राणी को  
 नया करके बीज हरियनस्पति, ओस का जल, चींटी के  
 बिल, पांचरग की काई, पानी, मिट्टी, मक्की के आले  
 इत्यादि को कुचल करके जो कोई एक इन्द्रिय घाले दो  
 इन्द्रिय घाले तीन इन्द्रिय घाले चार इन्द्रिय घाले और पांच  
 इन्द्रिय घाले जीवों को पीड़ित किये हों घोट पट्टचाई  
 धूल आदि से से हो, आपस म या किसी पदार्थ से

हों, इन्हें किये हों, हुए हों, वए पहुँचाया हो चकाये हों, हेरान किये हों, एक स्थान से दूसरे स्थान पर रखे हों, अधिक क्या किसी भी तरह से जानते मजानते जीवितम्य से अलग किये हों तो उस पाप के लिये मैं हुए से पछताता हूँ। मेरा वह पाप निष्फल हो जाय बस मैं इतना चाहता हूँ।

## ॥ तस्स उत्तरी सूत्र ॥

तस्म उत्तरी करणेण पायच्छिच्च करणेण विसोही करणेण विसङ्घी करणेण पावाण कम्मण निग्घायणहाए ठामि काउस्सग्ग ।

भावार्थ — इर्वापयिकी क्रिया से जीव विराघना जय पाप की शुद्धि पञ्चाक्षर द्वारा की। अब उसी की विशेष शुद्धि पायच्छिच्च के द्वारा परिणाम की विशुद्धि के द्वारा शस्त्रों के त्याग द्वारा करनी अकृती है। शस्त्रों का त्याग और पाप कर्मों का नाश काउसग्ग से हो सकता है। इस लिये मैं काउसग्ग करता हूँ।

तस्स उत्तरी के पाद अत्रत्य कहे।

## ॥ अन्नतथ उससिएण सूत्र ॥

अन्नतथ ऊमसिएण, नीमनिष्ण, खासिएण, छीएण,  
जमङ्गण, उद्दुएण, वापनिमग्गेण ममलिए, पिच्च  
मुच्छाए, सुद्धमेहिं अग सचालेहिं सुद्धमेहिं खेरसचालेहिं  
सुद्धमेहिं दिङ्गी सचालेहिं, एव पाइ एहिं, आगारेहिं,  
अमग्गो, अविराहिओ हुज्जमे काउस्मग्गो जाव अरिहताण  
भगवताण, णमुक्कवारेण न पारमि ताव काय ठाणेण  
मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि ।

भावार्थ - श्वास के लेन निकालने से, घासने से,  
छींकने से जमासे, डकार से अधो वायु के निकलन से,  
सिर चकराने से पिच्च विकार की मूर्छा से, सूक्ष्म-भग-  
संचालन से, कफ के संचालन से, दृष्टि-संचालन से ऐसे  
ही दूसरे भागारों से अन्य क्रियाओं द्वारा मेरा काउसग्ग  
अभग है। जब तक मैं "णमो अरिहताण" शब्द से अरिहत  
भगवतों को नमस्कार करके काउसग्ग पूर्ण न करू तब  
तक स्थिर रहकर मौन रहकर, ध्यान के द्वारा अशुभ  
व्यापारों से अपने शरीर को अलग करता हू।

अन्तत्य के-याद एव लोमस्म या-चार नवकार का काउस्सग करना "णमो अरिहताण" कहकर काउस्सग पाकर प्रकट लोमस्स कहे ।

## ॥ लोमस्सःसूत्र ॥

लोमस्स उज्जोअंगेर; घम्म तित्थयेरे' जिणे । अरिहते कित्तइस्स, चउवीसपि केवलि ॥१॥ उसम मज्झिअ 'च वदे' समवमभिणदण च सुमइच्च पउमप्पह' सुपास, जिणच चदेप्पह वदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदत्तं, तीयल सिज्जम-वासु पुज्जच । विमल मणत्तं च जिण, घम्म'सति' च वदामि ॥३॥ कुयु अर च मल्लीं, वदे सुणिसुव्वप नमिजिण च । वदामि रिहनेमिं, पास तह वद्धमाण च ॥४॥ एव षण अभियुआ, विहुपरयमला पहीण जं मणा चउवीसपि जिणवरां, तित्थयरा मे पसीयतु ॥५॥ कित्तिय वदिय महिया, जेण लोमस्म उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग बोदिलाम, समाहि वर मुत्तम दित्तु ॥६॥ चदेसु निम्मलयरा, आई-  
अहिय पयासयग । मागर वरगमीरा, सिद्धा सिद्धिं ॥७॥

माषाय — लोक में उद्योत करने वाले, घमतीय की स्वा  
 पना करने वाले; रागद्वेष को जीतने वाले—चउवीस तीर्थ  
 करो का मैं स्तवन करूंगा। श्री ऋषभदेव स्वामी श्री नजित  
 नाथ स्वामी, श्री समयनाथ स्वामी, श्री अभिनन्दन स्वामी  
 श्री सुमतिप्रभु श्री पद्मप्रभ स्वामी श्री सुपार्श्वनाथ स्वामी  
 श्री चन्द्रप्रभ स्वामी, श्री सुविधिनाथ स्वामी श्री शीतल  
 नाथजी श्री भयासनाथजी, श्री घासुपूज्य स्वामी श्री  
 विमलनाथजी श्री अनतनाथजी, श्री धर्मनाथजी श्री शक्ति  
 नाथजी, श्री कुथुनाथजी, श्री चरनाथजी श्री मल्लीनाथजी,  
 श्री मुनिसुमनजी, श्री नमीनाथजी, श्री नेमिनाथजी श्री पार्श्व  
 नाथजी श्री महावीर स्वामीजी इन चौबीस जिनेश्वरों की  
 मैं स्तुति और वन्दना करता हूँ। जिनकी मैंने स्तुति की है,  
 जो कम मल से मुक्त हैं जो अजर अमर हैं और जो तार्थ के  
 प्रथक हैं वे चौबीसों तार्थकर मेरे पर प्रसाद करें। जो  
 देवेन्द्रों से भी कीर्तित वन्दित और पूजित हैं जो लोक  
 में उत्तम हैं, जो सिद्ध गति को पाए हैं वे सिद्ध भगवान्  
 मुझको आरोग्य सस्यकत्व और समाधि का श्रेष्ठ वर देवें। जो  
 चन्द्र किरणों से शांत और निर्मलतर हैं और जो सूर्य  
 किरणों से भी अधिक प्रकाशमान हैं जो स्वयम्भूरमण  
 नामक महा समुद्र से भी गम्भीर हैं। देसे सिद्ध भगवान्

मुझको सिद्धि दें अर्थात् उनके आन्वयन से आरोग्य लाभ सम्पत्त्व समाधि और क्रमशः सिद्धि मुझे प्राप्त हो ।



बादमें "स्वमासमण" देकर इच्छाकारेण सदिसह भगवन् । वेनणो संदिसाह । इच्छ, कहे फिर 'स्वमासमण' देकर इच्छा वारेण सदिसह भगवान् वेनणो ठाउ ? इच्छ कहकर आसन बिछाकर उसपर बैठकर "स्वमासमण" देकर इच्छा कारेण सदिसह भगवन् । सज्जाय संदिसाह ? इच्छ कहकर "स्वमासमण" देवे और इच्छाकारेण सदिसह भगवन् सज्जाय करू । इच्छ पसा कहकर कर । साठ नघकार गिने अगर सदीं आदि के कारण कपड़ा ओढने की जरूरत हो तो 'स्वमासमण' देकर इच्छा कारेण सदिसह भगवन् पागरणो सदिसाह ? इच्छ कहकर फिर स्वमासमण देकर इच्छाकारेण सदिसह भगवन् । पागरणो पहिग्गाह ? इच्छ कहकर पहिलेहन किया हुआ शुद्ध वस्त्र पह्न करम्पल आदि ग्रहण करें । बाद में ४८ मिनीट ( कधी दो घडी ) तक सज्जाय ध्यान, पठन पाठन, आत्मचित्तन इत्यादि कर ।



❀ इति सामायिक लेने की विधि समाप्त ❀



# सामायिक फारने की विधि



सामायिक का समय ४८ मिनट पूरा हो जाय, तब एक "खमासमण" देकर इच्छा कारेण सदिसह भगवन् सामायिक पारवा मु पत्ति पहिलेहू ? इच्छ कहकर मुहपत्ति पहिलेहन करे । फिर "समासमण" देकर इच्छा० सदि० भगवन् ? सामायिक पारू ? यथा शक्ति कहकर एक 'खमासमण' देकर इच्छा कारेण सदिसह भगवन् सामायिक पारेमि । तद्वत्तिकहकर आधा अंग नमाकर तीन नवकार विसजन मुद्रा से गिने । पीछे धुटने टेक कर सिर नमाकर दाहिना हाथ चमचले पर या उमीन पर जमाकर भयवदसणण भदो' का पाठ बोले ।

॥ भयव दसणणभदो सूत्र ॥

भयव दसणणभदो, सुदमणो, धूलमह वशरो य ।  
सफलीकय गिह चाया, माह एवनिहा हुति ॥१॥ माहूण  
वदणेण, नासइ पाव असकिया भावा । फासुअदाणे निज्जर



अभिग्गहो नाण माईण ॥२॥ छउमत्थो मुदमणो, किच्चिय  
 मिच्चपि समरह जीवो । ज च न समरामि अह, मिच्छामि  
 दुक्कड तस्म ॥३॥ ज ज मणेण चित्थिय, — असुह वायाइ  
 भासिय किं चि । असुह काएण कय, मिच्छामि दुक्कड  
 तस्स ॥४॥ मामाइय पोमह सठियस्म जीवस्म जाइ जो  
 कालो । सो सफलो, चोघव्वो, से सो समार फल-हेउ ॥५॥  
 सामायिक विधिं से लिया, विधि 'से' किया, विधि 'से'  
 करते हुए अविधि आशावना लगी हो, दश मनके दश  
 बचन के बारह काया के इन वृत्तीम दूषणों में से जो की  
 दूषण लगा हो उसका मन-बचन-काया बरके मिच्छामि  
 दुक्कड ।

मायाय — धी दशण मद्र रात्रि-धी सुदर्शन श्रेष्ठ  
 धी स्थूल भद्र स्वामी और धी वज्र स्वामी ये चारों ज्ञान  
 धान् महात्मा हुए हैं । इन्होंने गृस्थाश्रम के त्याग के  
 चारित्र्य पालन से सफल किया । संसार त्याग को कर  
 याले साधु महात्मा ही के जैसे होते हैं । अशक्ति भाव  
 से साधुओं को प्रणाम करने वालों के पाप नाश होते हैं  
 २॥ माणुष आहार यानी वेने से निर्नरा हानी है ॥ ३॥

ज्ञानादि दिव्य गुणों की प्राप्ति जाती है। मोहित मन वाला अशुभस्थ जीव क्या याद रख सकता है? बहुत थोड़ा। हमलिये जो पाप सुझे याद नहीं आता उसके लिये मैं 'मिच्छामि दुःखं' मेरा पाप निष्फल हो यह चाहता हूँ। मने जो कुछ मन से अशुभ चिन्तन किया हो। बचा से अशुभ कहा हो और काया से अशुभ काय किया हो उस पाप की निष्फलता चाहाना हूँ। सामायिक पौष में स्थित जीवका जो समय व्यतीत होता है वह सफल है। दूसरा समय और उसमें की हुई क्रियाएँ उसार के दुःख फल की वृद्धि में निमित्त कारण हैं।

[ यहाँ सामायिक के अर्थात् दोषों को विचारे ]

## ॥ सामायिक के ३२ दोष ॥

मन के १० दोष—१ विवेक शुन्य क्रिया कर, २-यश 'कीर्ति बाँटा करे। ३-घन चाह। ४-अभिमान कर। ५-भय धारण' करे। ६-स्त्री-पुत्र राज्यादि क लिये नियाणा करे। (कि यदि सामायिक का फल हो तो सुझे ये। मिलें इस विचारणा को नियाणा कहते हैं)। ७-सामायिक फल में सन्देह करे। ८-क्रोध मान माया

लोभ इन कषायों का सेवन करे । ९-विनय हीन भाव धरे । १०-भक्ति भाव उत्साह पूर्वक न करे । ये मनके दश दोष हैं, सामायिक में इनका त्याग करे ।

वचन के १० दोष— १-गुवचन बोले । २-बिना विचारे बोले । ३-किसी पर झूठे आरोप कलक लगावे । ४-जिनागम विरुद्ध बोले । ५-सूत्र पाठ न्यूनाधिक कहे । ६-लड़ाई करे । ७-राजकथा देश कथा स्त्री कथा और भोजन कथा करे । ८-हसी ठठा करे । ९-अशुद्ध पाठ का उच्चारण करे । १०-गुण गुणाता मञ्जर की नाई बोले स्पष्ट अक्षर न बोले । वचन के इन दश दोषों का सामायिक में त्याग करे ।

काया के १२ दोष— १-पग पर पग चढ़ाकर दुष्ट आसन से बैठे । २-चल आसन से बैठे ( रोग आदिक में शरीर को यतना पूर्वक न हीलावे ) । ३-चल दृष्टि से इधर उधर देखे । ४-सामायिक में पाप क्रिया करे औरों को इशारे करे । ५-स्तम्भ-दिवार आदि का सहारा

ले बैठे । ६-प्रयोजन विना हाथ पर हिलावे सक्रोचे और लम्बावे । ७-आलस्य धारण करे । ८-अगुली आदि अंगोपांगों को मोटे काँडेके निकाले । ९-विना प्रयार्जन किये गुजली खुजावे । १०-गालों पे या सिर पर हाथ टककर चिन्ता तुरके जैसे बैठे । ११-निद्रा लेवे । १२-स्त्री व समान गरीब दककर बैठे । स्त्रिया के इन पारह दोषों में से जो कोई दोष लगा हो, उसके लिए "मिच्छामि सुककड" चाहे ।

[ सामायिक पारने की विधि समाप्त ]



नोट:—यदि सामायिकमें किसी प्रकार से तापित वस्तु का संघट्ट हुआ हो तो "हरिमावहिदा"—तम्ह उतरा अक्षय" कहकर एक लोहर" या चार नवदाका काउस्मण करे । परकर प्रत्य ' लोहर ' हो ।

❀ इति ❀

# १) श्री जिनमन्दिर दर्शन विधि ॥



श्री जिन मन्दिर में जाने वाले भाविक शुद्ध वस्त्र पहिन कर साय में चावल, बाशम, मिथी लद्दू, फल घणेरट मैवेद्य लेकर 'निसीही' कहकर मन्दिर के पास पहुचना चाहिये, वहाँ पहुच कर दूसरी "निसीही" कहकर मन्दिर में प्रवेश करे फिर तीसरी "निसीही" कहकर श्री वीतराम भगवान के दर्शन होते ही मुकबर घटन करे। फिर स्तुति करे।

॥ प्रभु वन्दना ॥

नाथ निरजन भव-भय भजन,

तीन भुवन के हे स्वामि ।

वीतराम सुख सागर हे-

भगवान महोदय गुणधामी ॥

अजर अमर पूरण परमात्म,

( १९ )

आत्म , सत्ता विसरामी ।  
करता हूँ मैं वन्दन तेरे,  
चरण कमल में सिर नामी ॥  
सुर नर नायक पूज्य प्रभो तू,  
पुस्तोत्तम शिव शंकर है ।  
बोधि विधाता बुद्ध तुही,  
परमात्म तू अभयदूर है ॥  
बाणि अगोचर वर्तन तेरा,  
तुही है जग में नामी ।  
करता हूँ मैं वन्दन तेरे,  
चरण कमल में सिर नामी ॥  
तेरे ही आदर्शों में है,  
मोहक मजुल मात्र भरे ।  
अथतो ऐसी करदो घस ज्यों,  
मेरा भी भव रोग टरे ॥  
'श्री हरिपूज्य कर्मीन्द्र' सुवन्दित,  
हो कर तेरा ।

करता हूँ मैं बन्दन तर,  
चरण कपल में सिर नामी ॥

इत्यादि बीर भी स्तुतियां कह सकते हैं। ध्यान रखने की बात है कि स्तुति बोलते समय पुष्प प्रभु की दाहिनी तरफ खड़ा रहे बीर स्त्री बाईं तरफ खड़ी रहे। स्तुति करने के बाद मूल गभारे की दाहिनी तरफ से तीन प्रक्षिप्ता लगाये। बाद में पाटे पर ( अक्षत ) चायल से तीन छोटी द्विगलियें ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य कहते हुए करें। नीचे के भाग में एक साधिया करके उपर के आकार में चन्द्रमा की तरह सिद्ध शिखा मडाए माड लेवे जैसे - नीचे दीये गये हैं।



॥ साधिया के दूहे ॥

दर्शन ज्ञान चारित्र्यना, आराधन थी मार ।  
मिद्ध शिलानी उपरे, हो मुज वाम भीकार ॥

अक्षतपूजा करता थका, सफल करू अवतार ।  
 फल मांगु प्रभु आगले, तार तार सुझ तार ॥  
 ससारिक फल मांगीने, रखडियो बहु समार ।  
 अष्ट कर्म निवारवा, मांगू मोक्ष फल सार ॥  
 चीहु गति भ्रमण ससारपा, जन्म परण जज्जाल ।  
 पचम गति विण जीवने, सुख नहीं त्रिहु काल ॥

फिर तीन खमासमण हाथ जोड़के खड़े होते हुए और  
 बैठते हुए इस प्रकार करे —

इच्छामि स्वप्नमपणो ! वदिठ जावणीज्जाए निसीहि  
 आए, मघएण वदामि ।

फिर हाथा गोड़ा ऊँचा करके नीचे वा पाठ कहे —  
 इच्छा कारेण सदिसइ भगवन् ! चैत्यवदन करूजी,  
 इच्छ' ।

( चैत्यवदन )

सिद्ध पुद्ग चौवीन त्रिन, ऋषभ अजित भगवान ।  
 समव अमिनन्दन्—सुमति, पद्मसुपास—महान ॥१



चन्द्रप्रभ-सुविधि-शीतल, श्री धेयांम-चिनेश ।  
वासुपूज्य प्रसु विमल जिन, अनत धर्म विशेष ॥२॥  
शान्ति-रुधु-अर मछी विमु, मुनिसुवत-नमि-नेम ।  
पादर्व-वीर "हरि" पूज्यए, नित पन्दु घर प्रेम ॥३॥

( इच्छानुसार ओर मी नये २ चेरपयदन कह सकते हैं )  
बाद में जकिचि सूत्र कहे

### ज किंचि सूत्र

ज किंचि नाम तित्थ, सग्गे पायालेमाणुसे लोए  
जाइ जिण बिंयाइ ताइ मब्वाइ वदामि ।

भाषाए — ( तीथ और जिन बिंयो को नपस्कार )  
स्वर्ग में, पाताल में और मनुष्य लोक में जो भी तीर्थ और  
जिन-प्रतिमाए है । उनको मैं व दना करता हू ।

इसके बाद नमोत्थुण कहें ।

॥ नमोत्थुण सूत्र ॥

नमोत्थुण अरिइताण, भगवताण, आइगराण तित्थयराण



न धाले हैं। अभय देने वाले हैं। विवेक सधु देनेवाले हैं। सु  
 मराहों को राह दिखाने वाले हैं। शरण देनेवाले हैं। सम्प  
 क्तव देने वाले हैं। धम क उपदेशक हैं। नायक हैं, धमके  
 सचालक हैं। धम में श्रेष्ठ हैं। धार गति का भ्रस्त करने  
 वाले चक्रवर्ती हैं। नाश नहीं होने वाले, धेए धान दर्शन  
 को धारण करने वाले हैं। धानी कम के धारण से मुक्त  
 हैं। स्वयं राण श्रेष्ठ को जीतने वाले ह और दूसरों को  
 जिगाने वाले हैं। स्वयं ससार सागर से पार हो चुके ह  
 और दूसरों को भी पार पहुँचाते हैं। स्वयं ज्ञानी हैं और  
 दूसरों को भी ज्ञान देनेवाले हैं। स्वयं मुक्त हैं दूसरों को  
 उद्धाने वाले हैं। सर्वज्ञ हैं सधदर्शी हैं उपद्रवरहित अचल  
 रोणरहित-अन त-धस्य-पाकुलता रहित पुनरागमन  
 रहित ऐसे मोक्ष स्थान को पाये हुए हैं। सब प्रकार के  
 भयों को जीतने वाले उन जिनेश्वरी को मेरा नमस्कार हो।  
 जो भूतकाल में हुए हैं। धतमान काल में हैं। और सधिय्य  
 काल में होने। उन सब तीर्थकरी को मैं ध दना करता हू।  
 इसके बाद नीचे लिखा हुआ सूत्र बोले

। जापति चेडआइ सूत्र ।

जापति चेडआइ, उड्डे अ अह अ तिरिअनोण अ ।  
 मन्वाइ ताइ वद, इह सतो तत्थ सताइ ॥

भावार्थ — ऊर्ध्वलोक अर्थात्स्वर्ग लोक में अधोलोक अर्थात् पाताल निवासी नागकुमार आदि भवनपतियों में, तिरछा लोक यानि मनुष्य लोकमें जितनी जिनेश्वरों की प्रतिमायें हैं । उन सबको मैं यहा अपने स्थान में रहा हुआ वन्दना करता हू ।

## ॥ जावत के वि साहू सूत्र ॥

जावत के वि साहू । मरहेरवय महाविदेहे अ ।  
सव्वेसिं तेसिं पणओ तिविहेण तिदह-विरयाण ॥

भावार्थ — ५ भारत, ५ परवत, ५ महाविदेह क्षेत्रों में जो मनोदण्ड घचन दृढ और काय दृढ से विरक्त यानि अशुभ क्रियामों को न करने वाले, न दूसरों से कराने वाले और न अनुमोदन करने वाले साधु महारमा हैं । उन सबको मैं प्रणाम करता हू ।

परमेष्ठिनमस्कार ।

नमोऽईत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

भावार्थ — धी अरिहत सिद्ध आचार्य,  
1 व साधुओं को मेरा नमस्कार हो ।

## । उवसग्गहरस्तोत्र ।

उवसग्ग हर पास, पास वदामि कम्म-घण-सुवक्क  
 विसहर-विस-निन्नास, मगल-कह्माण-आवास । विसहर  
 फुल्लिग मत्त, कठे धारेड्ढ जो मया मणुओ तुस्म गह् रोग  
 मारी, दुह-अरा अत्ति उवसामं चिद्धुत्त दूरे मतो, तुज्झ  
 पणामोवि बहुफलो द्वोइ । नर तिरिणसु वि जीरा, पावती  
 न दुक्ख दोहग्ग ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंठापणि  
 कप्पपायवन्महिण । पावति अविग्गेण जीवा अयरापरठाण  
 ॥४॥ इय सधुओ महायम भत्तिन्मरनिन्मरेण हियण ।  
 ता देव दिअ बोहिं भवे २ पास जिण-चद ॥५॥

साधार्थ — सब प्रकार के उपसर्गों को दूर करने वाला  
 पाश्वनाम का यज्ञ जिनका सेवक है । जो कर्मों की राशियों  
 से मुक्त है । जिनके स्मरण मात्र से जहरीले सर्पों वा  
 अहट भी नाश हो जाता है । जो मगल और आरोग्य के  
 आधार हैं । ऐसे भगवान श्री पाश्वनाथ स्वामी का मैं  
 चन्दन करता हू । जो मनुष्य भगवान के नाम गर्भित  
 'विमहर फुल्लिग' मंत्र को हमेशा कठ में धारण करता है—

भर्षात् पड़ता है उसके  
 माँ और दुष्ट जवा से  
 हे भगवन् ! आपसे बिना  
 रही सिफ आपको ही  
 देता है, क्योंकि उसके  
 दुष्ट और दुर्भाग्य नष्ट  
 प्राप्य सम्यक्त्व विना  
 प्रभावशाली है। उसे  
 स्थान को प्राप्त करते हैं  
 वाले पार्श्वदेव। इस  
 स्तुति को करके मैं चार  
 सम्यक्त्व को-यथार्थ बोद्ध

( प्रभु के सामने चार  
 के स्थान पर स्तुति

### १. प्रभु

तुम्हें नाथ नैया दि  
 तिरानी पड़ेगी। तेर। का  
 हूषत नैया दि

जो नैया मेरी, तेरे विरुद्ध में स्वामी पढेगी । तुम्हें० ।  
हरि कवीन्द्र की यही विनती है प्रभु । मुक्ति नगरिया  
दिखानी पढेगी । तुम्हें० ३ ।

बाद में दोनों हाथ जोड़कर भस्तक से लगाकर जय  
वीरराय पढ़े ।

### । जयवीररायसूत्र ।

जयवीरराय । जगद्गुरु । होऊ परम तुर पभावओ  
मयव । भव निव्वेओ मग्गाणु सारिया इह फल सिद्धि ॥१॥  
लोग-विरुद्धाओ, गुरुजण पूजा परत्थकरण च । सुह  
गुरु-जोगो तुक्कयण सेवणा आमवपम्बडा ॥२॥

भाषाणः—हे धीतराग ! हे जगद्गुरो ! आपकी जय  
हो । संसार से बैराग्य, मागानुसारिता इहफल की सिद्धि  
लोक विरुद्ध व्यापार का त्याग गुरुओं की पूजा, परोपकार  
पुष्टि, संयमी साधु गुरुओं का योग, उनके यथार्थ उपदेश  
में अखण्डित आदर ये सब आपके प्रभाव से मुझे भवोभय  
में प्राप्त हों । ऐसी प्रार्थना करता हूँ ।

इसके बाद अखण्डित चैदधान का पाठ कहे ।

## । अरिहंत चेडयाण-सूत्र ।

अरिहत चेडयाण करेमि काउस्सगग । वदण वत्तियाण,  
 पूअण-वत्तियाए, मक्कार वत्तियाए, मग्माण-वत्तियाए,  
 बोदिळाम-वत्तियाए, निरुवसगग-वत्तियाए, सद्दाए, मेहाए  
 च्चिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्डंभाणीए ठामि काउस्सगग ।

माधार्थ — अरिहत भगवान की प्रतिमाओं के घन्दन-  
 पूजन सरकार और सम्मान करने का मुख्य अयसर प्राप्त  
 हो, और उने घन्दन आदि क्रियाओं के द्वारा सम्पत्त्य और  
 मोक्ष प्राप्त हो । इस निमित्त मे मैं कायोरसग करता हू ।  
 बढ़ती हुई धरदा बुद्धि-धृति-धारणा और अनुपेक्षा पूर्वक  
 पाप व्यापारों से शरीर को पृथक् करता हू ।

बाद मे 'अप्रार्थ' कहकर एक "नमकार" का काउ  
 स्सग करे । काउस्सग पारकर "नमोअंसु सिद्धाचार्योरा  
 म्पाय-सर्वे साधुभ्य " कहकर एक स्तुति कहे ।

### ● स्तुति ●

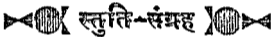
तीर्पङ्कर अङ्कर सुत्तमागर भगवान्,  
 हरिपुज्य त्रिनेत्र त्रिसुवन पुण्य प्रधान ।



सुमत योगीश्वर अगम गुणी अरिहत,  
प्रणमामि 'करीन्द्र' सुवन्दित-पद जयवत ॥



चैत्यवदन से पदले प्रार्थना रूप बोलने योग्य



। १ ।

झाता समस्त-सुवस्तु के भव-  
सिन्धु—तर झट पा गये,  
अविरोध पूर्वापर बचत-  
वादक विमल-जीवन मये ।  
जो माघुबन्ध अशेष-दोष-  
विमुक्त गुण-निधि धन्य हैं,  
बन्दू मदा उनको, मले ये-  
वीर हरि या धन्य हैं ।

## श्लोकः

तुभ्य नमस्त्रिभुवनार्ति-हराय नाथ !  
 तुभ्य नमस्त्रिभुवन-तलामल-भूषणाय ।  
 तुभ्य नमस्त्रिजगत परमेश्वराय,  
 तुभ्य नमो जिन ! भयोदधि शोषणाय ॥  
 त्व नाथ ! दुःखिजनवत्सल ! हे शरण्य-  
 कारुण्य पुण्य वसन्ते ! गशिर्नां धरेण्य !  
 मरुत्या नते मयि महेश ! दया विधाय  
 दुःखाद्दुःखोद्दलन-नत्परता विधहि ॥

## । दुहा ।

शस्त्र नहीं पावनहीं, नारी भी नहीं साथ ।  
 वीतराम जिन नाथ को, याते जोड़ु हाथ ॥१॥  
 जिन प्रतिमा जिन सारखी, आगम वचन प्रमाण ।  
 पूजू प्रणमू प्रेम से, पाउ कोटि करपाण ॥२॥

( ३२ )

प्रभु-दर्शन सुख सम्पदा, प्रभु दर्शन नवनिद्र ।  
प्रभु दर्शन थी पामिपे, सकल पदारथ मिद्र ॥३॥  
सुखसागर भगवान् जय, जयहरि पूज्य जिनेश ।  
जय कबी द्र षर वन्द्य ! तु, जय द सुसे महेश ॥४॥

( १ )

ॐ कार बिन्दु सयुक्त, नित्य ध्यायन्ति योगिन ।  
कामद मोक्षद चैव, ॐ काराय नमो नमः ॥ १ ॥

( २ )

दर्शन देवदेवस्य, दर्शन पाप—नाशन ।  
दर्शन स्वर्गसोपान, दर्शन मोक्ष—साधन ॥ २ ॥

( ३ )

सरस शीत सुधारस सागर, शुचितरं गुणरत्नमहाकर ।  
भक्तिक पकज बोध दिवाकर, प्रतिदिन प्रणमामि जिनेश्वर ॥

( ४ )

महोदयमयं, कैवल्य—चिद्वृत्तमय ।

रूपातीतमय स्वरूपरमण, स्वामाविष्ट-श्रीपदम् ॥  
ज्ञानोद्योतमय कृपारसमय, स्याद्वादविद्यालय - ॥  
श्रीसिद्धाचल-तीथराज मनिश, वन्द्यमार्गीयम् ॥

( २ )

नेत्रानदकरी भवोदधितरी, श्रेयस्तोमङ्गरी ।  
श्रीमद् धर्म-मदानरेन्द्र-नगरी, ध्यायल्लगानूषणी ॥  
द्वर्षोत्कर्षशुभ-प्रभावलहरी, रामद्विपाविन्दरी ।  
मूर्ति श्रीजिनपुगवस्य भवतु श्रेयस्त्रीदेहिनाम् ॥

( ८ )

अर्हन्तो भगवत इन्द्रमहिता सिद्धाय सिद्धि-स्मिता-  
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्याटशाप्यायकाः ॥  
श्रीसिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा रत्नप्रयागवक्त्रा ।  
पचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिन, कुर्यन्तु शोभगलम् ॥

( ७ )

श्री जगनायक, तु धणी महा योग, महाराज ।  
मोटे पुन्ये पामीयो, नम दरसन म आज ॥

( ३४ )

( ८ )

आज मनोरथ सब फले, प्रगटे पुण्य कलोल ।  
पाप करम दूरे टल्या, नाठा दुख ददोल ॥

( ९ )

प्रभु दरसन सुखसम्पदा, प्रभु दरसन नरनिद्रि ।  
प्रभु दरसनथी 'पामीए, सकल पदारथ सिद्धि ॥

( १० )

भावे जिनवर पूजिये, भावे दीजे दान ।  
भावे भावना भावीए, भावे केवल ज्ञान ॥

( ११ )

जिवदा ! जिनवर पूजीए, पूजा नां फल होय ।  
राजा नमे प्रजा नमे, आण न लोपे कोय ॥

( १२ )

जगमें तीरथ दोय पड़ा, शत्रुजय गिरनार ।  
गढ़ श्रुपभ समोसर्या, एक गढ़ नेमकुमार ॥

( ३१ )

( १३ )

फूला केरा बाग में, बैठा श्री विनयाव ।  
जिम तारामा चन्द्रमा, तिम सोह महाराव ॥

( १४ )

बाही चम्पो मोगरो, मोवन कुलिया ।  
पाम जितेश्वर पूजिये, पांचो बंगुलिया ॥

( १५ )

प्रभु नाम की औपधी, खरे मनये साथ ।  
रोग शोक व्यापे नहीं, महादोह निरु बाप ॥

( १६ )

प्रभुका नाम अमोल है, या वगये नहि मोल ।  
नफा बहुत टोटा नहीं, श्रुत एत हल से मोल ॥

( १७ )

' आमा बहाली बीजली, धारी घालो  
राजुल घाला नेमजी, अपको ॥ ३२ ॥

( ३६ )

( १८ )

अरिहत सिद्ध आचारज भला, उपाध्याय महाराज ।  
साधु सेवो भावसे, पाँचु ही भगलिक काज ॥

( १ )

॥ श्री आदीश्वर चैत्यवदन ॥

जय जय नाभिनरिंद नद, सिद्धाचल मडन ।  
जय जय प्रथम जिणद चद, भवदुःख विहटण ॥  
जय जय साधुसुरिंद ष्टद-वदिय परमेश्वर ।  
जय जय जगदानद कद, श्री ऋषभजिनेश्वर ॥  
अमृत सम जिन धर्मनो ए, दायक जगमें जाण ।  
तुल्ल पद पकज प्रीतिघर, निशदिन नमत कल्याण ॥

( २ )

॥ श्रीऋषभ जिन चैत्यवन्दन ॥

सुवर्ण वण गजराज गामिन । प्रलम्ब-बाहु, सुविशा  
लोचनम् ॥ नरामरेन्द्रैः स्तुतपाद पङ्कज । नमामि भक्त्य  
ऋषभ जिनोच्चमम् ॥ १ ॥

( ३७ )

( ३ )

॥ श्री शांति जिन-चैत्यवन्दन ॥

मोलम जिनवर शान्तिनाथ, सुखे तिरि तयो ।  
 कषन वरण शरीर फाति बलिउप बनिगामी ॥१॥  
 अचिरा अगज विश्व सेन नरपति इउवन्द ।  
 मृग लछन घर पद कमल, सब सुखे ना वन्द ॥२॥  
 जगमा अमृत जेहवी ए जाम अवाह बय ।  
 एक मने आराधता लहिये कोरे इनाद ॥३॥

( ४ )

॥ श्री नेमिजिन-चैत्यवन्दन ॥

प्रह समे प्रणमो नेमिनाथ, त्रिसा वयवत ।  
 जादय कुल अवतम हम, न्या सुवत ॥१॥  
 समुद्र विजय शिवादवी वात, पति सुवत ॥२॥  
 सुदर श्याम शरीर ज्योति, इरे सुवत ॥३॥  
 गढ गिरनार जिण लघोप, बज्र प्र बनिताम ।  
 तास धमा कल्याण मुनि वातिके इरे प्रणाम



( ३८ )

( ५ )

॥ श्री नेमिजिन-चैत्यवन्दन ॥

तोड़ी अढ भव प्रीतही, छोटी राजुल नार ।  
पशुओं की रक्षाकरी, धन धन नेमि कुमार ॥१॥  
देव दयालु दीपता, ब्रह्मचारी अरिहत ।  
शख सुलछन, श्याम तन, जयतु नेमि जयवत ॥२॥  
सुप्रसागर भगवान हरि पूज्य परम गुण धाम ।  
गढ गिरनारे शिव गया, निश दिन करूँ प्रणाम ॥३॥

( ६ )

स्तम्भन पार्श्वनाथ-चैत्यवन्दन ॥

सेठी तट मेरूधाम, यमणपुर ठाम ।  
सम सिरि पास साम, राजे अमिराम ॥१॥  
विशुधेसर सिरि अमयदेव, सठवियाणदिय ।  
शुइ जल सिंचिय नीलवरण, फण पछुव मठीय ॥२॥  
कुसुमानलीण, शिवफल दायक जाण ।  
भविश-मणु, पावठ पद

( ३२ )

( ७ )

॥ श्री गोडी पार्श्व-चैत्यवन्दन ॥

पुरिमा-दाणीय पासनाह, नमिये मनरग ।  
नील वरण अश्वसेननद, निर्मल त्रिस्तंग ॥१॥  
कामित पूरण कल्प झाखी, बाया सुत सार ।  
श्री गोडिपुर साय नाम, जपिये निघार ॥२॥  
त्रिसुवन पति त्रेवीशमो ए, अमृतमय बसवाण ।  
ध्यान धरता एहनो, प्रगटे प . कर्याण ॥३॥

( ८ )

॥ श्री पार्श्वजिन-चैत्यवन्दन ॥

ॐ अहं ज्योतिर्मयी, पुरुषादानी देव ! ।  
परम प्रभावी पार्श्वजिन ! चाह तुम पद सेव ॥१॥  
चिन्तामणि चिन्तामणि मत्र मनोहर नाम ।  
चिंता शूरण कर करो, हृल मन चितित काम ॥२॥  
धरण इन्द्र पद्मावती सेवित पारस नाथ ! ।  
नित कवीन्द्र कीर्तित करो, मोहनाथ ! सनाथ ॥३॥

( ४० )

( ६ )

॥ श्री महावीर—चैत्यवन्दन ॥

बहु जगदाधार सार, शिवसपति कारण ।  
जन्म जरा परणादिरुप, भव ताप निवारण ॥१॥  
श्री सिद्धार्थ तात मात, त्रिभूला तनु जात ।  
सोचन धरण शरीर धीर, त्रिभुवन विख्यात ॥२॥  
अमृत रूपे राजतो ए, चोवीसमो जिनराय ।  
क्षमा प्रमुख कल्याण गुण, आपोकरी सुपसाय ॥३॥

( १० )

॥ श्री महावीर जिन—चैत्यवन्दन ॥

सिद्धार्थ सुत सिंह सम, कर्मकरी कर नाश ।  
सिद्धार्थ प्रकटा दिया, शासन सुखद प्रकाश ॥१॥  
दुखमा भी सुखमा हुआ, पंचम आरा आज ।  
दर्शन पाये आपके, जय २ मरीच निवाज ॥२॥  
मोक्ष धाम पावापुरी, स्पर्शन, दर्शन योग ।  
पाकर अब “हरि” पूज्य हो, पाउगा शिब भोग ॥३॥

( ५१ )

( ११ )

॥ श्री सिद्धगिरि-चैत्यवन्दन ॥

जय २ नामि-नरिंद-नद, सिद्धाचल महण ।  
जय २ प्रथम जिणद चद, मव दु.स्र विहडण ॥१॥  
जय २ साधु सुरींद विद, वदिय परमेसर ।  
जय २ जगदानद-कद, श्री ऋषम जिनेसर ॥२॥  
अमृत सप जिन धमनोए, दायक जगमें जाण ।  
तुष्ट पद पङ्कज प्रीतघर, निशदिन नमत कल्याण ॥३॥

( १२ )

॥ श्री सम्मेत शिखर-चैत्यवन्दन ॥

तारक तीर्थ शिरोपणि-जय जय गिरि सम्मेत ।  
दर्शन वन्दन स्पर्शना शिवरमणी सकेत ॥१॥  
अजितादिक जिनवर यहां, सिद्ध हुए हैं वीश ।  
कर्मवर्गणा दलिक सब, ध्यान घटी में पीस ॥२॥  
पार्श्वनाथ के नाम से, त्रिभुवन में प्रख्यात ।  
तीर्थेश्वर "हरि" पूज्यपद, प्रणमू नित

( ४२ )

( १३ )

॥ पर्यूपण पर्व-चैत्यवन्दन ॥

पर्व पर्यूपण फालमें, बन्दू भी जिनराज ।  
धन्य घड़ी दिन माग धन पाया अरिचलराज ॥१॥  
कल्पियुग सतयुग से बड़ी, पानु मैं सुखकार ।  
घन भेटे जिनराज को, वांछित फल दातार ॥२॥  
सुखसागर भगवान जिन, त्रिकरण शुद्धि विधान ।  
सुरगण नायक "हरि" नमें, नमू नित्य बहुमान ॥३॥

( १४ )

॥ श्री नरपद-चैत्यवन्दन ॥

जय २ श्री अरिहत जय-सर्व सिद्ध भगवान ।  
जय घुरीधर जय सदा पाठक ज्ञान निदान ॥१॥  
जय साधु सपतामधी परमेष्ठी ये पांच ।  
चिन्तामणि इनसे अवर नरकी नकली काच ॥२॥  
सम्यग् दर्शन-ज्ञानवर चरण तपस्या चार ।  
दिव्य परम गुणसे "हरि" पूज्य बनें नर नार ॥३॥



## ॥ प्रभु प्रार्थना ॥

( तब—तेरा कौन है तेरा कौन है हां सरा कौन है )

प्रभु भक्ति में मन जोड़ जोड़ जोड़ जिया जोड़रे ।  
त्रिया जोड़रे जिया जोड़रे हारे जिया जोड़रे ॥ टेर ॥  
दूर नहीं भव सिंधु किनारा, प्रभु भक्ति हो जीवन नारा ।  
दुनिया से नाता तोड़ तोड़ तोड़ जिया जोड़रे ॥ प्रभु० १ ॥  
सबसे ऊंचा प्रभु का पद है, अन्तर घट म प्रभु की हृद है ।  
पाने को अब उसे दौड़ दौड़ दौड़ जिया जोड़रे ॥ प्रभु० २ ॥  
'त्रिनहरि'पूज्यप्रभु सुखसागर अपना जीवन कुसुम चड़ाकर ।  
सेव सदा कर होड़ होड़ होड़ जिया जोड़रे ॥ प्रभु० ३ ॥

( ४४ )

## ॥ प्रभु प्रार्थना ॥

( १५—मठ कर तू कर्मिमान )

आजा तू भगवान् चाह दरगुन दान ॥ १ ॥  
पापी धर्मी तेरे मत में, एक रूप होत सगत में ।  
ज्योति रूप महान । आजा तू भगवान् ॥१॥  
पापी हू परवा मत करना, करुणा निधि करुणा तुम करना ।  
पावन गुण परधान । आजा तू भगवान् ॥२॥  
जिन हरि पूज्य पधारो स्वामी, मन मंदिर की भेटो स्वामी ।  
धरूँ मदा मैं ध्यान । आजा तू भगवान् ॥३॥

## ॥ प्रभु की पहिचान ॥

( तज—करीय लागारे देवरिया राम रक्षिया )

प्रभु की पावन यह पहिचान प्रभु की पावन यह पहिचान ।  
तीन लोक के शिखर पिराजे जगनायक जगमान ॥१॥  
जनपते नहीं जो मरते, केवल ज्ञान निधान ।

करता हरता नहीं जो परके, निज पद पुण्य प्रधान ॥ प्र० १ ॥  
 जो ज्योतिर्मय सिद्ध सरूपी, भविजन सिद्धि निदान ।  
 कर्म कलक रहित अमिरामी, त्रिभुवन तिलक समान । प्र० १ ।  
 प्रभु मंदिर में प्रभु की प्रतिमा, आलबन गुण खाण ।  
 'चिनहरि' पूज्य प्रभु दर्शन से प्रकृष्टे परम कल्याण । प्र० ३ ।

## ॥ प्रभु-प्राथना ॥

मैं आया तेरे द्वार पर कुल लेकर जाऊँगा ।  
 अपने सुख दुःखकी सारी घातें नाथ सुनाउगा ॥ टैर ॥  
 जबकि तेरा कहलाता हूँ मैं, सेवक दुनियाँ में ।  
 तब क्योंकर अपना जीवन, दुःखमय नाथ बिठाउगा । मैं० १ ।  
 तू भीतराग रहता है इससे, यह दुःख पाना है ।  
 पर तुझको तज मैं ओरो का, नहीं दाम कहाउगा । मैं० २ ।  
 अपने अनन्त सुख में से मुझको, तू कुछ दे देगा ।  
 तो 'हरि-करीन्द्र' होकर मैं सुखसे निर्वं गुण गाउगा । मैं० ३ ।



( ४६ )

## ॥ प्रभु-प्रार्थना ॥

( तर्ज—मेरी आहूँका तुम अमर दस लेना )

तुम्हें नाथ नैया तिरानी पडेगी ।

तिरानी पडेगी तिरानी पडेगी ॥ तुम्हें० टेर ॥

तारन तरन है विरद तुम्हारो प्रभु ! ।

हूबत नैया तिरानी पडेगी ॥ तुम्हें० ॥ १ ॥

भव-भागर मे हूयी जो नैया मेरी ।

तो तेरे विरद म खामी पडेगी ॥ तुम्हें० ॥ २ ॥

“हरि कवीन्द्र” की यही विनती है ।

शक्ति-नगरियां दिखानी पडेगी ॥ तुम्हें० ॥ ३ ॥

## ॥ प्रभु-प्रार्थना ॥

( तर्ज—जमुनाजी में सेहे हरि राम लता )

कहो कैसे सुनाउ प्रभु पीठी बतियाँ ।

बीठी बतियाँ मेरी बीठी बतियाँ ॥ कहो० टेर ॥

जिमि जिमि याद मोहे आवत है तिमि तिमि ।  
 फटत जात है मोरी छतियाँ ॥ कहो० ॥१॥  
 जानत है तुही प्रभु बिन कहे बिन सुने ।  
 दुःखमय मेरी अन्तर गतियाँ ॥ कहो० ॥२॥  
 सब दुःख दूर कर अब प्रभु मेरे तुही ।  
 “हरि-कवीन्द्र” करे कीरतियाँ ॥ कहो० ॥३॥

### ॥ प्रभु-प्रार्थना ॥

( तर्ज—मेरी आदका तुम असर देख लेना )

तूही तूही मेरा तूही तूही मेरा ।  
 तूही प्रभु प्राण आधार है मेरा ॥ टेरे ॥  
 जीवन साथी हे नाथ पनादो ।  
 पड़ा हूँ शरन बनी चरनन बेरा ॥ तूही० ॥१॥  
 ओर प्रपची अनेक मिले पर ।  
 कुछ मी किसी ने न दिल को है घेरा ॥ तूही० ॥२॥  
 नूरे नूरानी मोहनी मूरत ।  
 तू हुआ है निबेरा ॥

जाती मही नहीं अबतो जुदाई ।  
तेरी हज़ुर में ही रह मेरा डेरा ॥ तृही० ॥४॥  
सिद्धमत्त के फाविल हे नाथ बनादो ।  
'हरि-कवीन्द्र' मिटा दो बखेरा ॥ तृही० ॥५॥

### ॥ मन - प्रबोध ॥

( तर्क—रखिया की )

जिनवर दरिस्सण पाय मनवा ! तू क्यों धिर नहीं थाय । टेरा  
जिावर दरिस्सण दुरलम जाणो ।  
बार बार मिलणो नहीं टाणो ।  
हार थारो आयुष एले जाय । मनरा तू क्यों धिर० ॥१॥  
भोग रोग से भरे पड़े हैं ।  
मारग दुश्मन घने अटे हैं ।  
हारै थारी घचलता नविजाय । मनरा तू क्यों धिर० ॥२॥  
भज धिर हो हरिपूज्य प्रसुको ।  
ज्ञान ज्योति से ध्यात विसुको ।  
हारै थारी कीर्ति कवीन्द्र जु गाय । मनरा तू क्यों धिर० ॥३॥

( ४१ )

## ॥ प्रभु-प्रार्थना ॥

( तब -हे प्रभा आनन्द दाता ज्ञान हमको दीजिये )

दीन बन्धो ! हे दयासिन्धो ! अरज सुन लीजिये ।

दूर कर अज्ञान सब शुभ ज्ञान हमको दीजिये ॥ १ ॥

बालक सभी हम हैं तुम्हारे प्रेम को बस चाहते ।

हे पिता परमात्मा बस प्रेम बरपा दीजिये ॥ दीन० ॥१॥

माँ बापका ही बालकों को सर्वथा आधार है ।

आप हैं माँ बाप तो रक्षा हमारी कीजिये ॥ दीन० ॥२॥

निर्बल सभी हम क्यों रहें जबकि पिता बलवान हो ।

शक्ति देकर दूर निर्बलता हमारी कीजिये ॥ दीन० ॥३॥

देश-जाती-धर्म का उद्धार ज्यों होने लगे ।

मार्ग बह हमको प्रभो बस आप दिखना दीजिये । दीन० ॥४॥

तुम शिक्षाने को न हममें है कवीन्द्रों की कला

भेंट है यह कुञ्ज स्वीकृत विमो कर लीजिये ॥ दीन० ॥५॥

## ॥ प्रभु-प्रार्थना ॥

( तब—गुलशन में खिलेंगे दोनों जने )

प्रभु आओ मिलें हम दोनों जने ।  
दोनों जने हाँ दोनों जने प्रभु आओ ॥टेर॥  
प्रभु तू है बादल में हूँ विजली ।  
पानी होकर बहें हम दोनों जने ॥प्रभु०२॥  
प्रभु तू है चन्दा में हूँ तारा ।  
दिल मिल क खिलें हम दोनों जने ॥प्रभु०२॥  
प्रभु तू है सरज में बनु किरण ।  
परकाश करे हम दोनों जने ॥प्रभु०३॥  
प्रभु तू हो घागा फूल बनु में ।  
फिर माला बने हम दोनों जने ॥प्रभु०४॥  
प्रभु तू सुख—सिन्धु में हूँ नदियाँ ।  
एक रस बने हम दोनों जने ॥प्रभु०५॥  
प्रभु तू है भीरा में लट छोटी ।  
एक रूप बने हम दोनों जने ॥प्रभु०६॥

प्रभु तू है काव्य में है कवीन्द्र ।  
दिव्य रसको बहावें दोनों बने ॥ प्रभु० ७ ॥

॥ सिद्धाचल-स्तवन ॥

तर्पे—चाहे तारो या म शरी—( कर्मलो ) ]  
बना रह मैं, तीर्थेश के शरण में ।  
तू मी जो हो तो, तीर्थेश के शरण में ॥ टेर ॥  
शी विमल जल—घाग ममान घारा ।  
बहा करू मैं, तीर्थेश के शरणमें ॥ चाह० १ ॥  
के रूख जैसे, शुभ मार नम्र होकर ।  
। सफल बनाउ, तीर्थेश के शरणमें ॥ चाह० २ ॥  
सूयकुण्ड जैसे, गम्भीर तापहारी ।  
एण हो रह मैं, तीर्थेश के शरणमें ॥ चाह० ३ ॥  
दुक के शिखर सम, हो निष्प्रकम्प योगी ।  
स्वसाध्यको मैं तीर्थेश के शरण में ॥  
“हरि कवीन्द्रो” के मी बगम्य  
तीर्थेश के शरणमें

## ॥ श्री ऋषभजिन स्तवन ॥

( राग—भीम पञ्चास )

घन्य हो ऋषभदेव भगवान् युगला घर्म निवारण वाले ।  
 प्रथम तुम दिया जगतको ज्ञान, बताया खान पान अनुपान  
 क्रिया जगमें नाप महान्, उच्चम नीति दिखाने वाले । घ०१।  
 प्रथम तुम दीक्षा त्रत लिया धार, जाना मधुसूता असार ।  
 तबसे हुवा शान्ति प्रचार, जीवों की रक्षा करने वाले । घ०२।  
 प्रथम तुम दिया घर्म उपदेश, तोड़यो मिथ्यापति को लेश ।  
 हाथों मोह पड़त नरेश, सत्य की राह दिखाने वाले । घ०३।  
 प्रथम तुम भेजी मोक्ष पसार, माता मरुदेवी दिलघार ।  
 तैसे “हरि” की भी दो तार, मुक्तिक पदके देने वाले । घ०४।

## ॥ श्री चन्द्रप्रभ जिन स्तवन ॥

( राग—श्री—मारवाड़ा जिला की )

चन्द्र प्रभुजिन चन्द्र नमो सुख कन्दार, सब फद विसार  
 अमन्द हरे दुख द्वदारे सुजाण ॥ चन्द्र० १

चन्द्र सुलाह्नन श्वेत सुवर्ण बिराजे रे, जिनराज अपार ।  
दर्शनगुण दर्शननिर्मल आनदारे, सुजाण ॥ चन्द्र० २ ॥  
कारण जोगे कारज मिद्धि पावैरे, स्व स्वभावे निरघार ।  
तन्मय अश्रुसरल थिर सेवक बटारे सुजाण । चन्द्र० ३ ।  
प्रभुमुख शारद चन्द्र सुधा बरसावेरे, हरसावे नरनार ।  
नयन कटोरे भर पीबत निर्द्वन्दा रे सुजाण ॥ चन्द्र० ४ ॥  
‘हरि कवीन्द्र’ प्रभु धरण शरणमें पायारे, तज माया चार ।  
चाहृ नहीं अब नर सुरपद धरणीन्दा रे सुजाण । चन्द्र० ५ ।

॥ श्री शान्ति—जिन स्तवन ॥

( तज—अबहार मेरे प्यारे शरम प्रभु है आधार )

दर्शन की क्या है बहार ?

बहार मेरे प्यारे ? दर्शन की क्या है बहार ? । टेरा ।

श्री हयणापुर तीरथ स्वामी, शान्ति प्रभु सुखकार ।

कार मेरे प्यार ॥ दर्श० १ ॥

विश्वसेन अचिरा सुत बन्दो, घदन से होंगे भव पार—

पार मेरे प्यारे ॥ दर्श० २ ॥



चक्री तीर्थंकर पदवी कै धारी, प्रभु हैं करुणा मडार—  
मडार मेरे प्यारे ॥ दर्श० ३ ॥

मृग लाछन प्रभु कांचन काषा, पायाका है न विकार—  
विकार मेर प्यारे ॥ दर्श० ४ ॥

'जिनहरि'पूज्य प्रभु दर्शनकी महिमा आत्म दर्शन का—  
का मेरे प्यारे ॥ दर्श० ५ ॥

॥ श्री नेमि प्रभु—प्रार्थना ॥

( तर्क—छाटे म बलमा मेरे भांगने में गुह्री खेळें )

भूलो मत बलमा नेमि स्याम ये पूरव भव प्रीति ।  
न्यासन आय गये लोट यह कैसी है रीति ॥ टेर  
पशुओं की सुनके पुकार बलमा करुणा लाई ।  
सुझको विसराई गये स्याम सोचो क्या है नीति ॥ भू० १  
दर्शन कर पाई नहीं नाथ वस इतना सुन पाइ ।  
इयास गय गिरनार मैं तो रह गई रीती ॥ भू० २  
विरहा की दिल मेरे आग बलमा खूब लगाई ।  
कैस सुझाई कहो जाय सुझको बलमा बीती ॥ भू० ३

अब ना रही कोई आश मेरः आप सहाई ।  
 आई मैं बलमा तोरे पास दशन अमृत पीती ॥ भू० ४ ॥  
 घन राजुल अवतार प्रभु से प्रीति लगाई ।  
 माया छिटकाई सुकवीन्द्र गावें गुणमय गीती ॥ भू० ५ ॥

## ॥ श्री नेमिजिन-प्रार्थना ॥

( राज—छोटी मोटी छाना )

कैना तुम्हारा है प्रेम कहोजी ? नमि नाथजी !  
 तुम हम दोनों पूर्व भवों के हाँ पूर्वभवों के,  
 प्रेमी हैं भगवान् ! जाते हो कहाँ नाथजी ॥ कै० १ ॥  
 समुद्र विजय शिवादेवी के नन्दन देवी के नन्दन,  
 जीवन कर सुनसान । जाते हो कहाँ नाथजी ! ॥ कै० २ ॥  
 तुमने दया है की पशुओं पे, की पशुओं पे,  
 सुनिये दयानिधान । जाते हो कहाँ नाथजी ! ॥ कै० ३ ॥  
 जीवन घन ! तुम मानो न मानो, ही मानो न मानो,  
 मैं चल्छु सग सुजान, जाते हो कहाँ नाथजी ! ॥ कै० ४ ॥

'जिनहरि' पूज्य प्रभु परमेश्वर, प्रभु परमेश्वर,  
दे दो पहले ज्ञान, जाते हो कहां नायजी ॥ कै० ५ ॥

॥ श्री पार्श्व जिन स्तवन ॥

( तत्र--मरे माला मटी गुलाबो गुम )

चिन्ता चूर चिंतामणि पाम प्रमो ! ।

मेर चिंतित अर्थ को पूर प्रमो ! ॥ टेर ॥

चिंतामणि तू नाथ मेरा, विश्व में विख्यात है ।

चिंता हरण है विरुद्ध तेरा, तू जगत का तात है ॥

अपने दासकी आज्ञा को पूर प्रमो ! ॥ चिंता० १ ॥

जब कि तू चिंतामणि है पम हृदय मदार में ।  
दारिद्र्य दुश्मन क्यों सताये फिर सुखे ससार में ॥

करो दारिद्र्य मेरा दूर प्रमो ! ॥ चिंता० २ ॥

मगवान भी हरि पूज्य तू मेरा परम आधार है ।  
तेरे धरण के क्षरण में जोड़े हृदय के तार है ।

पूरो दिव्य 'कबीन्द्र' में नरु प्रमो ! ॥ चिंता० ३ ॥

## ॥ श्री पाठार्वाजिन स्तवन ॥

( तर्ज—भिनासर ग्यामि अतरजामी तारा पारम नाथ—[ राम -माठ ] )

पूजू पारम स्वाभी शिव सुखधामी विघ्न विदारन हार टिग  
तीरथ काशी बनारसी सुन्दर, मदिर देव विमान ।  
गगा रग तरग विभूषित, दर्शन पुन्य प्रधानरे ॥ पू० १ ॥  
नील वरण नव हाथ की काश, अहि लछन अमिराम ।  
बससेन नृप वामा राणी, सुत शुभ गुण उद्दामर ॥ पू० २ ॥  
कमठ महा शठ बाल तपस्वी, धूणी जलता नाग ।  
ज्ञानी प्रभु नवकार सुना, धरणी द्र क्पिा महा भागरे । पू० ३ ॥  
बल उपसर्ग सहें सुखसागर, भी भगवान अद्वेष ।  
पद्मावती धरणीन्द्र सुसेवित, सम परिणामी विशेषरे । पू० ४ ॥  
'जिनहरि' पूज्य प्रभु परमेश्वर, पारम मत्र प्रभाव ।  
दर्शन वदन पूजन प्रभुको, निज प्रभुता गुणदावरे । पू० ५ ॥

## ॥ श्री वीर प्रभु प्रार्थना ॥

( तर्ज—आजो आजो ह मर माधु रही शुद्ध सग )

आजो आजो हे वीर प्रभुजी हमे बना दो वीर ॥ टेर ॥

पावन शासन हमने पाया आज आपका वीर ।  
आराधन कर उसको पाने धन अपना तरुदीर ॥ आ० १ ॥  
दूर हटावें हम निर्बलता शीवें हम बलवीर ।  
घबड़ावें ना दुस्तमें ऐसी दिखलादो तदवीर ॥ आ० २ ॥  
गुरुजन विनय कर हम बनकर ज्ञान गुणी गम्भीर ।  
धीर धीर हो निज जीवन से हर पराई पीर ॥ आ० ३ ॥  
सुखसागर भगवान महोदय प्रेम सुपावन नीर ।  
वर्षा दो जीवन उपवन में फैले सुरमि मरीर ॥ आ० ४ ॥  
हम मिल गावें मविनय जय जय जिनहरि पूजित वीर ।  
प्रसू चरणों में शरणागत हो पावें भवजल तीर ॥ आ० ५ ॥

॥ महावीर जिन स्तवन ॥

( तर्ज—अथ तरे बिना कौन मेरा कृपा कन्हैया )

बन्दू मैं महावीर मेरे पीरहरैया, आधार एक विश्वके उद्धार करैयाटे

शक्ति नहीं है पाम में छाह हैं बुजदिली ।

इमसे ही मेरी आतमा रहती है अधखिली ॥

कि दो मुझे नाथ महाशक्ति घरेया ॥ व दू० १ ॥

माया महा अन्धेर की छाया है छारही ।  
 खाता हूँ ठोकरें न मुझे राह मिल रही ॥  
 पथ आओ दिखाओ ए मेरे ज्योति जगैया । वन्दू० २ ।  
 सुखसिन्धु है भगवान तुही मेरा महारा ।  
 'हरिपूज्य' दिखादो मुझे भय मिथ किनारा ॥  
 मेटो अनादि कालका यह भुल भुलैया । वन्दू० ३ ।

॥ श्री पार्श्व जिन स्तवन ॥

( राग—मारेग होला )

जय बोलोरे पाम जिनेश्वर की जय बोलो०॥ टेर ॥  
 मस्तक मुकूट सोहे मन मोहन, अगियाँ मोहे केमरकी । ज० १ ।  
 त्रिभुवन ज्योति अखडित तनकी, स्याम घटा  
 जैसे जलधर की ॥ जय० २ ॥  
 बाल पणे में अद्भुत ज्ञानी, करुणा कीनी विषधरकी । ज० ३ ।  
 कमठ उडाय वाय ज्यू घादल, जीत करी अपने धरकी । ज० ४ ।  
 मात बापाउयरे जिन जायो, राणी अश्वसेन नरेश्वरकी । ज० ५ ।

अष्ट करम दल सबल खपाये, भेणि चढ्या जेशिवपुरकी। ज०  
कहे 'जिनचद' मेर प्रभु पारम, जैसी छाया सुरतरुकी। ज०

॥ श्री मधुवन—शिखरजी स्तवन ॥

मधुवन में जाय मची होरी, मधुवन में ॥ टेर ॥  
ज्ञान गुलाल अबीर उहावो समता केसर रंग घोरी। मधु० १।  
अमृतरूप धरम जिनवरको शुद्ध 'क्षमा' कहे कर जोरी। मधु० २।

॥ श्री पार्श्व जिन स्तवन ॥

( राग—वसन्त )

सांवरो सुखदाई जाकी छवि बरणी न जाई। सांवरो० । तेर  
भी अयसेन वापाजी को नदन, कीरती त्रिभुवन छाई  
समेत शिखर गिरि महन प्रभु को, देख दरश हरखाई  
हृदय मेरो अति हुलसाई ॥ सांवरो० १  
आज हमारे सुरतरु प्रगळ्यो आज आनद बघाई  
तीन भुवन को मैं नायक निरुख्यो, प्रगटी पूर्व पुन्याई  
सफल मेरो जन्म कहाई ॥ सांवरो० ।

प्रभु के सरस दरम बिनपाये, भव भव मटकयो मैं माई ।  
अब तेरो चरण शरण चितचाहत, 'बाल' कहे गुण गाई ॥  
प्रभुजी से लगन लगाई ॥ मावरो० ३ ॥

॥ श्री सम्मेत शिखर तीर्थ स्तवन ॥

( राग—गजल )

शिखर सम्मेत तीर्थ में, अब आनन्द आता है ।  
विनय से वन्दना करते, भविक मन मोद पाता है ॥ १ ॥  
यहां पर बीस कर्याणक, हुए हैं बीस जिनवर के ।  
फरसते बीस टूकों को, अब आनन्द आता है ॥ शि० २ ॥  
यहां पर पाम जिनवर की, मनोहर मांवरी सुरत ।  
प्रभावक दिव्य दर्शन से, अब आनन्द आता है ॥ शि० ३ ॥  
यहां पर भोमिया राजा, बिराजें जागती ज्योति ।  
उन्हीं की छत्र छाया में, अब आनन्द आता है ॥ शि० ४ ॥  
विष्णु गिरिराज पर चढ़ते, निरसते मोहिनी लीला ।  
विशदवर शत जीवनमें, अब आनन्द आता है ॥ शि० ५ ॥



परम "हरि" पूज्य तीरथ में, निजातम भाव शुद्धि से।  
रमण करते हुए निशदिन, अज्ञय अग्नद आना है ॥ शि०५॥

## ॥ श्री पर्यूपण स्तवन ॥

( तर्ज—गोपीचन्द लक्ष्मी वादल मर्वे र )

पर्यूपण म मैं धीतराग, भजू भाव से ॥ टेर ॥

श्री जिनराज जगत गुरु स्वामी, आतपरामी नामी ।  
अन्तरजामी षट्गुण धामी, आरामी अभिरामीर । पर्यु०१ ।

श्री जिन आतम अरु निज आतम, रूप अनूप विचारे ।  
जिन दर्शन निज दर्शन करक, मेदखेद सब टारे र । पर्यु०२ ।

पर्यूपणमें समकित मिथ्या, मिश्र मोहनी टारी ।  
प्रथम अनन्तानुबन्धी की, चौकड़ी दूर निवारी र । पर्यु०३ ।

काल अनादि पुद्गल सगी, बहिरातम बेढगी ।  
अतर गुणचगी हो करके, हुआ परमपद रगीरे । पर्यु०४ ।

पर्यूपण मे सुर "गणनायक—हरि" नन्दीधर जावे ।  
ही जिन मदिर में जिन बन्दू मैं षडु भावेरे । पर्यु०५ ।

## ॥ दीपावली-स्तवन ॥

[ तर्ज-मै बन की चिठिया • ]

हे वीर ! विरह दुःख महा न मुझ से जाई रे,  
 या स्नेह आपका मुझ पर अति सुखदाई रे ॥ १ ॥  
 मैं इन्द्र जाल मानाथा, लड़ना प्रभुसे ठाना था,  
 स्वामी प्रभाव पर चेही भाव, मेरे सपस्त मिट जाइ रे ॥ २ ॥  
 मैं आप रूप भूनाथा, विध्यात्व झूले झूला था,  
 प्रभु आप दश होते प्रकर्ष, ममकित ज्योति प्रकटाईरे ॥ ३ ॥  
 प्रभु सेवाधी सुखकारी, प्रभु दर्शन भव भय हारी ।  
 आनद कद सब दुःख दद, आमूलचूल विघटाईर ॥ ४ ॥  
 मेर प्रभु केवल ज्ञानी, तीर्थकर भय गुण खानी ।  
 अमृत समान वाणी प्रमाण, भवि प्रार्थि सुन शिव जाईर ॥ ५ ॥  
 लव र शका होती थी, प्रभु कृपा तमी होती थी,  
 सविवेक एक उत्तर अनेक, भ्रम सुनते मममिट जाईरे ॥ ६ ॥  
 प्रभु वीतराग बड भागी, मैं तो हू पूरा रागी,  
 तज राग भाव, रपते स्वभाव गौतम शिव पदवी पाईर ॥

प्रभु सुखसागर भगवाना, भी जिनहरि पूज्य प्रधाना,  
गौतम गणेश सपरो विशेष, सेवा कवी द्र मन भारि ॥६७॥

## ॥ पौष दशमी स्तवन ॥

नित नम्र पारस प्रभु जिनरात्र जिनकी महिमा अनुपम आज ।टेर  
पौष वदी दशमी दिन धन धन, जगमें जनमें जिन जगतात ।१।  
जनम कल्याणक परमपुनीठा, काशी नगरी धन धन घाम ।२।  
अश्वसेन नृप वामराणी, धन जिन जनक जननी विख्यात ।३।  
कुटिल कमठ मद हारक तारक, नाग नागनी के अमिराम ।४।  
'हरि कवीन्द्र' सुकीर्तित मैने, पायोधन जिन दर्शन सार ।५।

## ॥ अखातीज का स्तवन ॥

[ तर्क-अशु सो ओगी गुरु मेरा-भारणवृषि ]

बाबा ऋषम जिनद तपधारे ।

कम कलक निचार रे ॥ बाबा० ॥टेरा॥

राज तजा सुख भाज तजा निज आतम के उपयोगी ।

३२ विचरे स्वामी, सयम सुखके भोगीरे ॥ बा० ।१।

भिक्षा विधि नहीं लोक पिछाने, प्रभु कर्मोदय जानें ।  
 मौन सहित वर्षाधिक तपको, परम क्षमा सह ठानेरे । वा० २।  
 भक्ति सहित नरनारी प्रभु के अर्पण हित नित लावें ।  
 कन्या हयगय रथ रतनों को, नाथ नजर नहीं ठावेरे । वा० ३।  
 धी भेषांस कुँवर पुन्योदय जाती समरण भावे ।  
 जिन दर्शन भिक्षा विधि जाने इक्षुरम वहिरावेर ॥ वा० ॥ ४ ॥  
 धन दाता धन पात्र प्रभुजी धन दिन तीज सुधावे ।  
 पचदिव्य प्रकृत नित जय जय सुरगण पति हरि गावें । वा० ५ ॥

## ॥ नवपद स्तवन ॥

[ तज—जिनमन का इका आत्म मं ]

नित नवपद गुण भडार नमू, सुपकारक परमाधार नमू । ऐरा  
 अहंपद आत्मरूप नमू, प्रभु सिद्ध महागुण भूप नमू ।  
 सरीश्वर-शासन धम्म नमू, पाठक पद पाठारम्म नमू ॥ १ ॥  
 ॥ नित नवपद ॥

साधु निज माधन हेतु नमू, दर्शन पद सब गुण केतु भर्तू ।  
वर मान चरण तप योग नमू, ये नवपद निजपद भोग नमू ।  
नित नवपद० ॥ २ ॥

सुखसागर पद भगवान नमू, मध अंत्र तत्र परधान नमू ।  
'हरि'पूज्य समीहितकार नमू, परमोदय कारक सार नमू ॥  
नित नवपद० ॥ ३ ॥

---

◀ • 《 स्तुति-संग्रह 》 • ▶

---

कल्याणक स्तुति

मैं क्या हू ? आत्म-द्रव्य महागुण-खान,  
फिर क्यों दुख भोग ? कर्म योग परमाण ।  
क्या कर्म हमार हकको दें सताए ?  
हां, जिन पद पूजो हो कल्याण अमाप० ॥१॥

## श्री ऋषभजिन स्तुति

वृषलङ्घन कचन काया अद्भुत रूप,  
मरुदेवा नदन जगवदन जग भूप ।  
नृप नाभि कुलाम्बर अंबरमणि अनुरूप,  
नित षट् भावे निज गुण दाव अनूप ॥२॥

## श्री शांतिजिन स्तुति

श्री शांति जिनेश्वर परम शान्ति दातार,  
पह जीव अनादि कारण पाकर चार ।  
कर्मों के बन्ध में रहे सदैव अज्ञान्त,  
शांति प्रसू सेवत होवे परम प्रज्ञान्त ॥३॥

## श्री पार्श्वजिन स्तुति

पाण्ड मिटा दो होकर निर्भय वीर,  
अहरीलों पर भी दया करो गुणधीर ।  
अपने दुश्मन पर क्षमा करो आदर्श,  
समझावे स्वामी पार्श्व नमू बहु हर्ष

## श्री गीरजिन स्तुति

सिद्धारथ नन्दन मात वश अवतस,  
श्री त्रिशला पाता कृष्णी-मानस इस  
जय वर्द्धमान जय महावीर भगवान,  
जय शामन नायक मरे जीवन प्रान ॥५॥

## श्री नवपद स्तुति

नवपद निज पद म अदतागण कर आप,  
ध्यारो मिट जावे पूरप कृत मद्य पाप ।  
नहीं होय कदापि रोग शोच सताप,  
श्रीपाल गुणधना मम सुख होय अमाप ॥६॥

## श्री पर्यूपण स्तुति

जिन आज्ञा रागी षट्भागी भविलोक,  
पर्यूपण चाहे सुरज को जिम कोक ।  
पर्वाधान में होयें उद्यमवन्त,  
त्रिहू काले पूजे वीतराग अरिहंत ॥७॥

( ६९ )

## स्तुति

( उपजाति-बन्द )

दीव्यत्सुतीर्थेश्वर नाम कर्म—

प्रभावि-पुण्येन जिनेश्वराणाम् ।

कर्याणि-कर्याणक पञ्चक यत्,

करोतु कर्याण मनन्तमिदम् ॥८॥

◆【 श्री दादा गुरु स्तुति संग्रह 】◆

( श्लोक )

दामानु दामा इव सर्व देवा, यदीय पादाब्ज तले  
लुठन्ति । मरुस्थली-करपतरु स जीयाद् युग प्रधानो  
जिनदत्त हरि । १ ।

चिन्तामणि करपतरुर्वरामौ, कुर्वन्ति भव्याः किमु  
काम गव्याः । प्रसीदत श्री जिनदत्त हर सर्व पद  
पदे प्रविष्टम् । २ ।



नो योगी न च योगिनी न च नराधीशश्च नो शाकिनी ।  
नो वेताल-पिशाच-राक्षस गणा नो रोग शोकौ भयम् ।  
नो मारी न च विग्रह प्रभृतयः प्रीत्या प्राणस्योचकैः ।  
यो वै श्री जिनदत्त सूरिगुरुः । नामाधारव्यापति ॥३॥

( मंत्रिया )

बावन वीर किये अपने वगु, चौमठ योगिनी पाय लगाई ।  
डाइन माइन व्यन्तर खेचर भूत रु प्रेत पिशाच पुलाई ॥  
बीज तडक फडक मडक अटक रहे जु खटक न काई ।  
कह धममिह लघे कुण लीह दिये जिनदत्त की एक दुहाई ॥

राजे धुम ठौर ठौर एमो दब नहीं और,  
दादो दादो नाम से जगत जज्ञ गायो है ।  
अपने ही भाव आय पूजे लख लोह पाय,  
प्यामन को रनमाझ पानी आन पायो है ॥  
घाट घाट शत्रु दाट हाटपुर पाटन में,  
देह गेह नेह से कुशल बरतायो है ।

धर्मसींह ध्यान धरे सेवका कुशल करे,  
साचो भीतिन कुशलघरि नाम यू कदायो है ॥

## श्री दादा गुरु स्तोत्र

( नव—गुण २० संपद शिखरिणा इत )

गुणी छानी दादा शिव सुग्य विधाता भुवन में,  
नहीं है कोई भी गुरुवर तुही है पस तुही ।  
तुही माता तातानुपम गुण भ्राता हितु-सखा,  
गुरो दादा नित्य चरण शरण ते भवतु मे । १ ।  
तजे मने सारे कुपथ मतवाले कुगुरु जो,  
महा मायाही हैं विषय रमरागी मलिन हैं ।  
मिला स्वामी तूही सुविहित-हितपी यतिपते,  
गुरो दादा नित्य चरण शरण ते भवतु मे । २ ।  
तुही छाता भ्राता जिनपत यज्ञो विस्तृत विधि,  
प्रभाषी नेता है खरतरवराचार विदित ।  
महा पापी हूँ मैं पतितपथगामी तदपि हे—  
गुरो दादा नित्य चरण शरण ते भवतु मे । ३ ।

सुनी जानी तेरी परम उपकारी सु महिमा,  
 पुरे ग्रामे देशे मम विनय मी एक सुन लो ।  
 न होउ दुःखों से विषलित यही नाथ बल्दो,  
 गुरो दादा नित्य चरण शरण ते भवतु मे । ४ ।

हटाये लोगों को व्यसन गणसे देव तुमने,  
 सुशिक्षा द स्वामी महिर मुझ पे भी अब करो ।  
 सपथों को जो भी विकट विधि हैं वे सहज हैं,  
 गुरो दादा नित्य चरण शरण ते भवतु मे । ५ ।

उपेक्षा जो मेरी कथमपि करोगे युगवर !,  
 सहारा कोई भी फिर न मुझको है जगत में ।  
 सुनाता हूँ याते प्रभुवर सुनो कान धरके,  
 गुरो दादा नित्य चरण शरण ते भवतु मे । ६ ।

न है कोई ज्योति हृदय नम मेदी गुरु बिना,  
 न है कोई दानी परमपददायी गुरु बिना ।  
 अपापी पापों को सुगुरु हरते हैं, इस लिये,  
 गुरो दादा नित्य चरण शरण ते भवतु मे । ७ ।

सुखाम्मोघे स्वामी परम ऋणा सिन्धु भगवन् !  
रह सेवा में मैं यह बस मुझे नाथ वरदो ।  
कहीं भी होऊ मैं प्रणत हरि पूज्य प्रभुवर !  
गुरो दादा नित्य चरण शरण ते भवतु मे । ८ ।

—॥ श्री गुरुदेव स्तवन संग्रह ॥—

॥ श्री गुरुदेव स्तवन ॥

( तब—बीर बनाने वाले तुमको लाखों प्रणाम )

दादा देव दयालु तुमको लाखों प्रणाम ।  
श्री गुरुदेव दयालय तुमको लाखों प्रणाम ॥ टेर ॥  
मिथ्यामन का भैल मिटाकर, बोधि लाभ शुभ हमको देकर ।  
जैन बनाने वाले तुमको लाखों प्रणाम । दा० १ ।  
नाम मात्र की महिमा भारी, विपत्ति विदारण सपतिकारी ।  
योगीश्वर गुणवाले तुमको लाखों प्रणाम । दा० २ ।  
युगवर सुखसागर उपकारी, हरि जिन शमन में जयकारी ।  
दर्शन देन वाले तुमको लाखों प्रणाम ।

## श्री गुरुदेव स्तवन

( हम्बाला )

क्या हैं अपूर्व दर्शन, गुरुदेव जी तुम्हारे ॥  
दु ख दूर कीजिये सब, हम भक्त हैं तुम्हारे ॥ टे ॥  
गुरु के बिना जगत में, है कौन मार्ग दर्शक ।  
आया शरण में स्वामी, गुरुदेवजी तुम्हारे ॥ १ ॥  
चिंतापणी से बढकर, मनश्चिछतार्थ दानी ।  
सानी न ओर जगमें, गुरुदेवजी तुम्हारे ॥ २ ॥  
हरि पूज्य जैन शामन, पावन प्रकाश कारी ।  
चाह नदैव दर्शन गुरुदेवजी तुम्हारे ॥ ३ ॥

॥ श्री गुरुदेव स्तवन ॥

( तर्ज—अथ बोलोरे राम जिनैसर ॥ )

दर्शन दो श्री गुरुदेव हमें दर्शन दो ॥ टे ॥  
गुरु दर्शन बिन तरम रहे हम ।  
दो दर्शन गुरुदेव हमें ॥ दर्शन० १ ॥

तुम पथ के हम पथिक ममी हैं ।

निज पथ देव दिखा दो हमें ॥ दर्शन० २ ॥

चन्द्र चकोर मोर जिम बादल ।

तिम तुम दर्शन चाह हमें ॥ दर्शन० ३ ॥

विकमित होत कपल रवि-दर्शन ।

तिम तुम दर्शन हर्ष हर्म ॥ दर्शन० ४ ॥

'हरिजिन' शामन भाव प्रकाशन ।

आत्म प्रकाश दिखादो हमें ॥ दर्शन० ५ ॥

॥ श्री गुरुदेव स्तवन ॥

( तर्ज—मै बनकी चिदिया बनधर बन • लेत रे )

श्री दादा गुरुका दिलमें ध्यान ऋगाऊँरे ।

जिनदत्त सूरी दादा गुरु के गुण गाऊँ रे ॥ टेर ॥

गुरुदत्त जगत जपकारी, शुभ नाम मंत्र सुखकारी ।

गुरुदत्त सत्य गुणधाम नित्य, निज पत्त मंदिर में लाऊँरे-

॥ श्री

दादागुरु आप पधारो, सेवक के काज सुधारो ।  
गुरु दर्श-दर्प पावन प्रकर्ष-में अपने में लख पाऊँ रे ॥

॥ श्री दादा० २ ॥

गुरु सुखसागर भगवाना, हरि-मागर-सुर मषाना ।  
गुण भूष-रूप करक अनूप-दशन दुख दूर गमाऊँ रे ॥

॥ श्री दादा० ३ ॥

## ॥ श्री गुरुदेव स्तवन ॥

( तत्र—आधार मेरे प्यारे पारम प्रभु हैं आधार )

दातार मेरे प्यारे, दादा गुरु हैं दातार ॥ १ ॥

दत्त सृगीश्वर दादा गुरु हैं, कल्पतरु के अवतार ।  
अवतार मेरे प्यारे, दादा गुरु हैं दातार ॥ १ ॥

निपुतियों को सुपूत दते, निर्धन को धनके भडार ।  
भडार मेरे प्यारे, दादा गुरु हैं दातार ॥ २ ॥

गेनी बुरूप के रोग मिटारें, जल्दी से रूप सुधार ।  
मेरे प्यारे, दादा गुरु हैं दातार ॥ ३ ॥

निर्वुद्धियों में बुद्धि प्रयोगते, करते सुबुद्धि प्रचार ।  
प्रचार मेरे प्यार, दादा गुरु हैं दातार ॥ ४ ॥  
सेवो सुगुरु मवी सुरगण नायक, 'हरि' करे जयकार ।  
जयकार मेरे प्यारे, दादा गुरु हैं दातार ॥ ५ ॥

## ॥ श्री गुरुदेव स्तवन ॥

( सावर। मुखदाइ जाकी छवि वरणी न जाइ )

[ राम वसत होरी ]

परम गुरु सेवा पाई, निजातम ज्योति जगाई ॥ टेरे ॥  
श्री जिनदत्त स्रीश्वर दादा, महिमा जिनकी मवाई ।  
सेवा करते सेवक जिनकी, विपदा दूर हटाई ॥  
गुरु मेरे हैं वरदाई ॥ परम० १ ॥  
गढ़ गिरनार पे नागदेव की, लिखदे अम्बा पाई ।  
युगवर मरुधर सुरतरु जैसे, वांछित सुख फल  
मेवे मर इतीश नैवाई ॥



( ७८ )

वीर पीर अरु झोगणिया सब, लो छलने को आई ।  
गुरु के प्रसन्न-योग बलिहारी, देवें नित्य दुहाई ॥  
गुरु जग कीर्ति अमाई ॥ परम० ३ ॥  
देस दश में शुम्भ विराजे, परचा प्रगट सवाई ।  
सुखमागर भगवान महोदय, पूजो गुरु होके अमाई ॥  
सदा गुरु होत महाई ॥ परम० ७ ॥

॥ श्री गुरुदेव स्तवन ॥

( राग—सहाना धनाल )

श्रीजिनदत्त घरींदा, परम गुरु श्री जिनदत्त घरींदा ।  
परम दयाल दयाकर दीजे दरक्षण परमानन्दा । परम० १  
जङ्गम सुरतरु वांछित दायक, सेवक जन सुखकन्दा । परम० २  
सद्गुरु ध्यान नाम नित सपरण, दूर हरण दु ख ददा । परम० ३  
निज पद सेवक सानिष कारी राखिये गुरु राजिन्दा । परम० ४  
क जोरी विनय युत विनवे श्रीजिन हरण सुरीदा । परम० ५

( ७ )

ॐ { दादा कुशल गुरु स्तवक } ॐ



- १ -

[ गवल ]

कुशल करना कुशल करना, कुशल गुरुराज शासन में ।  
तुम्हीं हो शक्तिमय निजभक्त, विघ्नों के विनाशन में । टेर ।  
'महा अघेरे में सोते, निरखली अपने भक्तों को ।  
उठाकर आप अब जल्दी, लिना लाओ प्रकाशन में । कु० १ ।  
अपूर्व अपनी ज्योति का, दिखावें आप अब जल्दा ।  
कि जिनसे जोशें भी फैले, हमेशा खूब तन मनमें । कु० २ ।  
हैं भूले भक्त पर तुमको, भुलाना यों न लाजिम है ।  
दुआ है आपसे इतनी, बड़ादो भक्त जन धनमें । कु० ३ ।  
सदा "हरि" आपकी स्वामी, दया की बेल भक्तों पे  
कर छाया, हरे माया, अशान्ति हो न जीवन में ।

कुशल गुरु क्यों न देते हो, कही दर्शन मुझे अपना ।  
 अगरचे दूर रहना था, बनाया दास क्यों अपना ॥  
 जलीलों को जलाना ही, अगर मजूर है तुमको ।  
 विरुद्ध तब दीनबन्धु का, रखा, फिर नाथ क्यों अपना ॥  
 तुमारा मैं हुआ जब से, सदा तबसे तड़कता हूँ ।  
 न तड़काना तुम्हें लाजिम, शरन दो देव अब अपना ॥  
 मुसीबत मेट दो मेरी, दर्श दो क्यों करो देरी ? ।  
 गुजारिश है कभी-दर फी, निभालो नेह बस अपना ॥

आपके दर्शन बिना गुरुर ! रहा जाता नहीं ।  
 और दिल का हाल गैरों से कहा जाता नहीं ॥  
 है परेशानी यही कैसे तुम्हें पाऊँ गुरो ।  
 पथ ऐसा एक भी मेरी नजर आता नहीं ॥

हैं जुदाई क जिगर में जखम भारी हो रहे ।  
उनकी जलन का जोश भी मुझसे सहा जाता नहीं ॥  
हैं कुशल गुरु आप फिर क्यों देर इतनी हो रही ।  
अब और आशा में प्रमो मुझसे रहा जाता नहीं ॥  
'हरि'पूज्य गुरुवर दामकी अरदासको सुन लीजिये ।  
शक्तिदाता आप प्रिन बस ओर मन भाता नहीं ॥

-४-

[ गमल ]

कुशल गुरुराज जय तेरी, बढ़ादो शक्तिया मेरी ॥ टेर ॥  
हृदय में ध्यान धरता हू, उपाधि दूर करता हू ।  
मैं गाउ कीर्तिया तेरी, कुशल गुरुराज जय तेरी ॥ १ ॥  
सदा तुझ नाम लेकर के मैं करता काम हूँ जितने ।  
मफल होते वही देखे, कुशल गुरुराज जय तेरी ॥ २ ॥  
हैं तेरे मंत्र फी शक्ति, अजायब विश्व में रोशन ।  
मुझे उमका सहाग है कुशल गुरुराज जय तेरी

तुही सुख सिन्धु है भगवन् । पाम 'हरि' पूज्य उपकारी ।  
सहज मुक्ति बधू स्वामी, कुशल गुरुराज जय तेरी ॥ ४ ॥

॥ मणिधारी श्री जिनचन्द्र सूरि स्तवन ॥

तुमतो भले विराजोजी,

मणिधारी महाराज दिछी मं भले विराजोजी ॥ टेरे ॥

नरनारी मिल मदिर आवे, पूजा आन रचावे ।

अष्ट द्रव्य पूजा में लावे, मन वाछित फल पावे ॥ तुम० १ ॥

आशापूरो सकट चूरो, ये है विरुद तुम्हारो ।

बाधि व्याधि सब दूर नाशो, सुख सम्पत्त दे तारो ॥ तुम० २ ॥

वाद विवादे जन जय पावे, तार जलधि जहाज ।

बाट घाट भय पीड़ा मोजे, मपरण श्री गुरुराज ॥ तुम० ३ ॥

पुत्र पुनीता परम पिनीता, रूपे लक्ष्मी नार ।

श्रद्धि सिद्धि सुख सम्पति दीजे, भल भरजो भडार । तुम० ४ ॥

सेवक उपर कम्णा करजो, महिर नजर तुम धरजो ।

लीला घरमें भरजो, एतो काम तुम करजो । तुम० ५ ॥

# ॥ अस्वस्थकीय चौदह नियम ॥



नीचे लिखे चौदह नियमों को गुरुगण से समझ कर धारण करे तो ससार के कामों को करता हुआ भी गृहस्थ सयमी होकर मोक्ष का अधिकारी हो जाता है ।

सचित्त १, दन्व २, विगई ३, वाणह ४, तबोल ५, वर्य ६, कुमुमेसु ७, वाहण ८, सयण ९, विलेवण १०, वम ११, दिमि १२, न्हाण १३, मत्तेसु १४ ॥

१—सचित्त नियम—जिसमें जीव सचा हो ऐसे हरे शाक, फल, फूल, कच्चा पानी, बिना पका नमक, बेसंधा अनाज आदि सचित्त वस्तुओं की सरुया का परिमाण करे ।

२—दन्व नियम—जितनी चीजें मूह में डाली जाय जैसे दाल, चावल, रोटी, दांत कुचरणी आदि नखनों उनका परिमाण करे ।

३—विगड नियम—विकार को बढ़ाने वाली भोज्य सामग्री को विगड कहते हैं। सब विगड १० हैं। उनमें १—मधु ( सहित ), २—मांस, ३—मक्खन, ४ मदिरा ये चार महा विगड तो श्रावक को त्याज्य है। १—घी, २—तेल, ३—दूध, ४—दही, ५—गुड़, ६—पञ्जान इनका परिमाण करे।

४—उपानह नियम—जूते-भोजे स्लीपर-पावड़ी-चाखटी आदि पैर में पहिनने की चीजों का परिमाण करे।

५—तम्बोल नियम—पान सुपारी लोंग इलायची आदि मुखवासक पदार्थों का परिमाण करे।

६—बस्त्र नियम—जो पहिरने में और ओढ़ने में आवे ऐसे बस्त्र और आभूषणों की संख्या का परिमाण करे।

७—कुसुम नियम—जो सूघने में आवे ऐसे पदार्थ फूल अत्तर सूघने की तमासु आदि का गिनती कर परिमाण करे।

८—वाहन नियम—हाथी, घोड़ा, बैल गादी,

ऊट, मोटर, रेल, माइकिल इत्यादि की संख्या का परिमाण करे ।

९—शयन नियम—शुग्या बिछोना पलग पाट कुरमी आदि की संख्या का परिमाण करे ।

१०—घिल्लेपन नियम—केशर चन्दन तेल आदि की संख्या का परिमाण करे ।

११—ब्रह्मचर्य नियम—पर स्त्री का सर्वथा त्याग कर और स्व स्त्री से सुदूरी के न्याय से तथा बाह्य विनोद का परिमाण करे । ' स्त्री ' पर पुरुष का सर्वथा त्याग करे ।

१२—दिशा नियम—दिशायें चार और विदिशायें चार ऊचे और नीचे कुल मिलाकर दश दिशाओं में जाने आने के कोशों का परिमाण करे ।

१३—स्नान नियम—छोटा स्नान हाँध, पैर, मुँह आदि का घोना और बड़ा स्नान सारे शरीर को घोना उसका परिमाण करे ।



१४—भात नियम—अन्न पानी आदि मोजन क पदार्थों का जरूरत के मुताबिक तोल माप रखे ।

## ॥ छह काय ॥

१—पृथ्वी काय—मिट्टी नमक आदि जो खाने व हाथ धोने आदि के काम में आवे उसका परिमाण करे ।

२—अपकाय—न्हाने घोने व पीने के काम में आने वाले पानी का परिमाण करे ।

३—अग्नि काय—चुल्हा-भट्टी-धिराग-अंगीठी आदि का परिमाण करे ।

४—वायु काय—अपने हाथ से और हुक्म से जितने पखे चलाने में आवे उनका परिमाण करे ।

५—वनस्पतिकाय—हरा शाक आदि का वजन और जातियों का परिमाण करे ।

६—लसकाय—वेइन्द्रिय से लेकर पचेन्द्रिय तक के जीवों को बिना अपराध वे काम मन बचन काया से

कमी नहीं मारना । अनजान से मरजाय तो “मिच्छामि दुक्कड” दना ।

( तीन कर्म )

१—अग्नि—तलवार-चाकू-छुरी कैंची-सुई इत्यादि को चलाने का परिमाण करे ।

२—मसि—कागज, कलम, दावात, स्याही आदि का परिमाण करे ।

३—कृषि—खेती बगीचे आदि का परिमाण करे ।

उपर बताये हुए नियमों को प्रातः काल म और सच्चा समय में दोनों समय चितार अथवा दिन रात्रि के एक साथ विचार । तीन नवकार गिनकर धारे और तीन नवकार गिनकर पारे पारते समय “अजान में अधिक लगा हो तो मिच्छामि दुक्कड और कमती लगा हो तो लाम हो” ऐसा कहे । यह विना षष्ट के पापों से का उपाय है । इन नियमों को स्वीकार करने से आत्मा मोक्ष में परम-शक्ति को पाती है ।

॥ नवकारमी मुट्टमी पञ्चमखाण ॥

उगण् घूर नमुक्कार सहिय मुट्टि सहिय पञ्चमखाइ  
चउन्बिहपि आहार असण पाण खाइम साइम अन्नत्थणा  
भोगेण, सहसागारेण महत्तगागारेण सब्व समाहि वत्तिया  
गारेण वोसिरइ ।

( १ )

॥ विगय पञ्चमखाण ॥

विगई ओ पञ्चमखाइ अन्नत्थणाभोगेण सहसा गारेण,  
महत्तरा गारेण सब्वसमाहि वत्तियागारेण वोसिरइ ।

( २ )

॥ देशावकासिक पञ्चमखाण ॥

देशावगासिय भोग परि भोग अन्नत्थणाभोगेण सहसा  
गारेण महत्तसगारेण सब्व समाहिवत्तियागारेण वोमिरइ ।

---

१—इस पञ्चमखाण को करने वाला यथा शक्ति विगय छोड़े ।

नियम चितारने वाला यह पञ्चमखाण करे ।

॥ आवश्यक, विधि समाप्त ॥

